

# पर्यावरण मित्र

## Friends of Environment



Issue#12 January, 2015

अंक#१२ जनवरी, २०१५





## INDEX

## विषय सूची

President's Message .....	03 - 04	अध्यक्ष का संदेश .....	03-04
---------------------------	---------	------------------------	-------

### Breathing Purity

### वायु प्रदूषण दूर करने के लिए

World Anti Tobacco Day .....	05 - 07	विश्व तम्बाकू निषेध दिवस .....	05-07
Awareness on Holi .....	08	होली पर जागरूकता .....	08

### Thirst for Cleanliness

### जल प्रदूषण दूर करने के लिए

World Water Day .....	09	विश्व जल दिवस .....	09
World Environment Day.....	10 - 11	विश्व पर्यावरण दिवस .....	10-11

### Restoring Land Organic Fertility

### बढ़ायें जैविक जमीन की उर्वरक शक्ति

#### (Forest)

#### (वन)

Tree Plantation 2014 (Van Mahotsava) .....	12 - 13	वृक्षारोपण 2014 (वन महोत्सव) .....	12-13
World Forest Day .....	14	विश्व वानिकी दिवस .....	14
World Earth Day .....	15	विश्व पृथ्वी दिवस .....	15
Mixed Forest (Jagat Singh 'Jangli') .....	16 - 17	मिश्रित वन (जगत सिंह 'जंगली') का व्याख्यान .....	16-17
10 <sup>TH</sup> Paryavaran Mitra foundation's Day (Shri Chandiprasad Bhatt's honour & Lecture on culture of forest.) .....	18 - 23	10 वां पर्यावरण मित्र स्थापना दिवस पर (चण्डीप्रसाद भट्ट का सम्मान एवं "वन संस्कृति" विषयक व्याख्यान) .....	18 - 23
Van Darshan .....	24 - 26	वन दर्शन .....	24 - 26

#### (Organic Farming)

#### (जैविक खेती)

Jaivik Mela - Shikohabad & Mumbai .....	27	जैविक मेला — शिकोहाबाद एवं मुम्बई .....	27
Kishan Chaupal .....	28 - 29	किसान चौपाल .....	28 - 29
Alsi - Jeevan ke liye amrit .....	30 - 31	अलसी — जीवन के लिए अमृत .....	30 - 31

### Awareness Letter

### जागरूकता

Save Himalaya from Global Warming & Slogan Competition in College .....	32	वैश्विक तपन से हिमालय को बचाओ नारा लेखन प्रतियोगिता .....	32
Awareness Letters .....	33 - 35	जागरूकता सम्बन्धी पत्रक .....	33 - 35
Awareness on Global Warming .....	36 - 39	वैश्विक तपन के बारे में जागरूकता .....	36 - 39

### Paryavaran Mitra

### पर्यावरण मित्र

Paryavaran Mitra - Activities, Awareness Campaigns & Contacts .....	40	पर्यावरण मित्र — गतिविधियाँ, जागरूकता अभियान और सम्पर्क .....	40
--	----	--	----

#### For suggestions and information contact:

Kiran Bajaj - President, Phone: 022-22182139, 22185933,  
Fax: 022-22189075, E-mail: ksb@bajajelectricals.com  
Phone: 05676-234018, Fax: 05676-234018, 234300  
E-mail: pmhoskb@gmail.com

#### अतिरिक्त सुझाव व जानकारी के लिए :

किरण बजाज — अध्यक्ष, फोन : ०२२-२२१८२१३९, २२१८५९३३  
फैक्स : ०२२-२२१८९०७५, ई-मेल : ksb@bajajelectricals.com  
फोन : ०५६७६-२३४०१८, फैक्स : ०५६७६-२३४०१८, २३४३००  
ई-मेल : pmhoskb@gmail.com

Website: [www.paryavaranmitra.com](http://www.paryavaranmitra.com)





## President's Message

## अध्यक्ष का संदेश

**P**aryavaran Mitra completed 10 years in 2014. From infancy we now progress towards teenagehood. Guided by our motto, we worked hard these last ten years to reduce air, sound, water and land pollution.

Our objective is to reduce pollution of all forms and create a better life for our future. With this in mind, over the last ten years, Paryavaran Mitra worked towards:

- Reduction of air pollution by creating 12 mini forests in Shikohabad and Kosi. More than two lakh trees were planted. Anti-tobacco and anti-firework campaigns were carried out. Advocacy for better use of electricity and PUC checks for vehicles. Many awareness campaigns were held to give shape to these programmes.
- Reduction of Water pollution. Harvesting of rain water was promoted and technical help was offered towards this. Purification of waste water from factories as well as cleaning of water bodies was carried out by Paryavaran Mitra.
- Over 1000 farmers were educated in the methods of organic farming with help from agriculturists. Tree plantation drives were held, mini forests were developed and nurseries were developed.
- More than 100 Van Darshan tours were organised to inspire school and college students. More than 5000 wall writings were conducted around environmental topics. 1200 rallies, 1500 discussions, painting and quiz contests were held to promote environmental awareness and curb pollution.
- Paryavaran Mitra was fortunate to invite prominent environmentalists to celebrate special environment days. Shri Sundarlal Bahuguna, Shri Chandiprasad Bhatt, Shri Bittu Sehgal, Shri Pankaj Chaturvedi, Shri Ashok Kothari, Shri Anish Andheriya and Shri Jagat



**24** सितम्बर, 2014 को पर्यावरण मित्र ने अपने दस वर्ष पूर्ण कर लिए। इस तरह शैशव काल भलीभांति सम्पन्न हुआ। अब हम किशोरावस्था में प्रवेश कर चुके हैं। इन दस वर्षों की यात्रा में हमने अपने उद्देश्यों के अनुरूप हवा, पानी, भूमि और ध्वनि प्रदूषणों को कम करने की दिशा में कार्य किये।

हमारा उद्देश्य है हवा, पानी, भूमि एवं ध्वनि प्रदूषण को कम करना तथा वर्तमान एवं भावी पीढ़ी की रक्षा करना। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में

रखते हुए पिछले 10 वर्षों में पर्यावरण मित्र ने:

- वायु प्रदूषण को कम करने के लिए शिकोहाबाद एवं कोसी सहित 12 लघु वनों का विकास, 2 लाख से अधिक वृहद वृक्षारोपण, तम्बाकू निषेध, पटाखों का प्रयोग और धुंआ न करने, गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों को अपनाने की वकालत तथा वाहनों को पी. यू. सी. चेक कराने सहित वायु प्रदूषण न करने के लिए जागरूकता के विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का क्रियान्वयन किया।
- जल प्रदूषण को कम करने के लिए तथा भू-जल के संरक्षण के लिए वर्षा जल संचयन प्रणाली की स्थापना एवं तकनीकी सहायता, परम्परागत जलाशयों का जीर्णोद्धार, कारखानों के जल शुद्धिकरण के लिए ई. टी. पी. का संचालन तथा जल संरक्षण के लिए जागरूकता कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का क्रियान्वयन किया।
- भूमि प्रदूषण को कम करने के लिए जैविक खेती एवं 1000 से अधिक किसानों के मध्य जागरूकता, वृक्षारोपण, 3 हरित पट्टिकाओं का निर्माण, लघु वन विकास और पौधशालाओं का निर्माण तथा जागरूकता के कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का क्रियान्वयन किया।
- वर्तमान एवं भावी पीढ़ी को जागरूक करने एवं प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए 100 वन दर्शन कार्यक्रम, पर्यावरणीय विषयों पर 5 हजार से अधिक स्थानों पर दीवार लेखन, 1200 से अधिक रैलियां, 1500 गोष्ठियां तथा चित्रकला एवं सैकड़ों अन्य प्रतियोगिताओं की गतिविधियों को प्रमुखता से क्रियान्वित किया।
- विभिन्न पर्यावरण दिवसों के आयोजन पर कई विशिष्ट पर्यावरणविदों श्री सुन्दरलाल बहुगुणा, श्री चण्डीप्रसाद भट्ट, श्री बिट्टू सहगल, श्री पंकज चतुर्वेदी, डा. अशोक कोठारी,



## President's Message

## अध्यक्ष का संदेश

Singh 'Jungli' came and spoke about their experiences, struggles and success.

Over the last ten years, we have worked hard and achieved practical results yet; our practical efforts are but a drop in the ocean. There is more that needs to be done on an individual, group and community level. The most important basis of bringing any environmental change is to 'Change our Thinking'. We all need to join hands together to work for our environment, our country and our future. Everyone, young or old, educated or not, or from different backgrounds... everyone needs clean air and fresh food and water for survival.

Nature gives birth to culture and culture protects nature. Over thousands of years, our civilisation and our culture have developed in forests, on the banks of rivers, on coastal areas. Modern life has created greed and wreaked havoc on the environment. The floods of Kashmir and Kedarnath are examples of this negligence. We have behaved badly with Ganga and the Himalayas and the fury of Nature unfolds in many ways.

Environment protection needs to be the core of everything we do...right from our political strategies, social and education policies, caring for our environment needs to form the pillar of our actions.

Technological and social progress need to run parallel with environmental progress.

It is the nature of Nature to love Nature. It is time to take a leaf out of that book. To learn to live in harmony with ourselves and our surroundings.

Kiran Bajaj

श्री अनीश अंधेरिया, श्री जगत सिंह 'जंगली' आदि ने शुद्ध हवा, शुद्ध पानी, शुद्ध भूमि की आवश्यकता पर बल दिया है।

हमने इन 10 वर्षों में एक छोटा ही सही परन्तु ठोस व्यावहारिक कार्य किया है जो समुद्र में एक बूंद की तरह है। केवल किसी एक संस्था के कार्य करने से समस्या का समाधान नहीं होगा बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि नगर— नगर और गांव—गांव में जल—जंगल—जमीन को शुद्ध रखने का कार्य व्यक्तिगत, सामूहिक एवं संस्थागत स्तर पर हो।

इस सबका आशय यह है कि 'हमें अपनी सोच बदलनी है'। हम जो कुछ करें वह प्रकृति और देश की उन्नति के लिए करें क्योंकि शिक्षित या अशिक्षित, छोटा या बड़ा, गरीब या अमीर, कोई भी धर्म या जाति सभी को आवश्यकता है शुद्ध जल, वायु और खाद्य की।

प्रकृति के सहारे जन्म लेती है संस्कृति और संस्कृति से संरक्षित होती है प्रकृति।

कालक्रम के हर काल में प्रकृति हमारी सभ्यता और संस्कृति के केन्द्र में रही है। प्रकृति के अतिरिक्त हमारा अस्तित्व नहीं है। संसार की विभिन्न सभ्यताओं का विकास जंगलों, जलाशयों एवं नदियों के किनारे हुआ है। प्रकृति की रक्षा के कारण ही संस्कृति एवं सभ्यताएं पनपी हैं।

हमारे विवेकहीन, विलासितापूर्ण जीवन एवं आधुनिक जीवनशैली ने प्रकृति को बर्बाद कर डाला। प्रकृति के स्वार्थपूर्ण दोहन के कारण ही केदारनाथ, कश्मीर एवं अन्य स्थानों पर आपदाओं का संकट देखने को मिल रहा है। आज जो गंगा और हिमालय की दशा हुई है वह हमारी संस्कृति एवं प्रकृति के प्रति अशिष्ट आचरण का प्रतीक है। हम प्रकृति का भयावह ताण्डव देख रहे हैं।

यह नितांत आवश्यक हो गया है कि राजनीति, समाज एवं शिक्षा सहित समस्त क्षेत्रों में प्रकृति की संस्कृति को केन्द्र में रखा जाए और जोर से ठोस कार्रवाई की जाय।

आधुनिकता एवं हर क्षेत्र के विकास और उन्नति के साथ पर्यावरण का संरक्षण होगा तभी वास्तविक उन्नति होगी।

प्रकृति की तो प्रकृति ही है, प्रकृति से प्रेम करना। फलतः जीवन की सार्थकता और प्रसन्नता के लिए प्रकृतिमय होना ही होगा।

किरण बजाज





Breathing purity

सांस लें निर्मल वायुमंडल में

## World No Tobacco Day – a summary of programmes

Paryavaran Mitra organised a host of events during World No Tobacco month such as poetry and painting competitions, slogan contests, short plays, quiz, films, poster contests amongst other activities. There was a huge level of participation for these events. Students presented the ill effects of tobacco consumption. The posters also demonstrated how to keep oneself free from tobacco consumption.

The short plays were presented at Hind Parisar by children and conveyed some key messages around short life expectancy of people who smoked and used tobacco. One of the plays presented the story about a singer who lost her voice due to heavy consumption of tobacco that affected her lungs and throat. The quiz programme centred around questions about the ill effects of tobacco.



Winners of various contests receiving prizes from Mr. B.B. Mukhoapdhay, CEO, Hind Lamps

## विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर आयोजित कार्यक्रम

पर्यावरण मित्र द्वारा विश्व तम्बाकू माह के अंतर्गत कविता प्रतियोगिता, पेन्टिंग एवं स्लोगन प्रतियोगिता, लघुनाटिका / नाटक, प्रश्नमंच, मॉडल एवं पोस्टर व फिल्म प्रदर्शनी सहित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

कविता प्रतियोगिता के माध्यम से बच्चों ने तम्बाकू खाने से होने वाले विषैले रोगों से बचने के उपाय प्रस्तुत किये।

पोस्टर, पेन्टिंग एवं स्लोगन प्रतियोगिता में लोगों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। तम्बाकू से होने वाली हानियों एवं बचने के उपाय से सम्बन्धित पोस्टर और पेन्टिंग, वॉल पेन्टिंग तथा नारों के माध्यम से अपने विचारों को प्रस्तुत किया।

हिन्द परिसर में लघुनाटिका / नाटक एवं तम्बाकू जागरूकता से सम्बन्धित प्रश्नमंच का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ बच्चों द्वारा तम्बाकू निषेध नाटक की प्रस्तुति के साथ किया। नाटक में दर्शाया गया कि जो व्यक्ति तम्बाकू एवं सिगरेट का सेवन करते हैं उनका जीवन अल्पायु में ही समाप्त हो जाता है। एक अन्य लघु नाटिका की प्रस्तुति में दर्शाया गया कि तम्बाकू सेवन के कारण किस तरह एक प्रसिद्ध गायक कलाकार की आवाज गले व



The Chief Guest with the enthusiastic participants

प्रतिभागियों के साथ मुख्य अतिथि।





Breathing purity

सांस लें निर्मल वायुमंडल में



A model created by children at Hind Parisar

हिन्द परिसर के बच्चों द्वारा तैयार किया मॉडल।



Posters prepared by students for the Poster Contest

पोस्टर प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं द्वारा तैयार पोस्टर।

On May 31, World No Tobacco Day, a prize giving ceremony was held at Hind Parisar and a power point presentation prepared by Salaam Mumbai was shown. A few short films and posters around the same topic were featured as well. Paryavaran Mitra made a strong point that it was mandatory to quit tobacco to save our present and future generations from ill health.



ज्ञानदीप विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा तैयार टीशर्ट पेन्टिंग।  
A display of T-shirt Painting Contest by Gyandeep students

फेफड़े में इन्फेक्शन हो जाने के कारण हमेशा के लिए खत्म हो जाती है।

तम्बाकू से सम्बन्धित प्रश्नमंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें तम्बाकू से होने वाली हानियों तथा तम्बाकू सेवन से कैसे बचा जा सकता है, इस तरह के प्रश्नों से लोगों का ज्ञानवर्धन किया गया।

31 मई, विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर हिन्द परिसर स्थित संस्कृति भवन में पुरस्कार वितरण, चयनित मॉडल, सलाम मुम्बई फाउण्डेशन द्वारा तम्बाकू पर बनाये पॉवर प्वाइंट प्रजेन्टेशन, तम्बाकू पर लघु वृत्त चित्र

एवं पोस्टर प्रदर्शनी की प्रस्तुति की गई।

Mr. B.B. Mukhopadhyay, CEO, Hind Lamps visited the various exhibitions and said we should all abstain from tobacco consumption.

पर्यावरण मित्र ने आह्वान किया कि देश और समाज को बचाने के लिये तम्बाकू एवं नशा जैसी बुरी लतों से वर्तमान एवं भावी पीढ़ी को बचना होगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बी.बी. मुखोपाध्याय (उपाध्यक्ष, हिन्द लैम्पस् लि0) द्वारा पोस्टर प्रदर्शनी एवं मॉडल का अवलोकन किया गया। उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए। उन्होंने कहा कि "तम्बाकू एवं नशा जैसी बुरी आदतों से हम सबको बचना चाहिए।"







## Young Scholars and Gyandeep students spread the message of 'No Tobacco' through posters, models and skits.

A joint effort was made by Paryavaran Mitra, Gyandeep students and Young Scholars to spread the message around ill effects of tobacco consumption.

This was done with the help of paintings, skits and models. A lot of talent was on display as the various groups used their own artistic methods to convey the poignant message. The chief guest Dr. A.K. Ahuja emphasised that it was important to instil the message of 'no tobacco' from a very young age so that our youth could grow into adults who do not suffer from tobacco related ailments.

A T-shirt and painting competition was organised at Gyandeep School. Many students participated with great enthusiasm. Chief Guest, Dr. Jeetendra Singh Yadav, district basic education officer said, "Students were the future of our nation and it was important to relay important messages around this topic through active efforts with students."

The Commanding officer of U. P. NCC battalion, N. K. Tivatiya and Dr. Rajani Yadav, Director, Gyandeep encouraged and appreciated the students for their fabulous contribution to the event.

## यंग स्कालर्स एवं ज्ञानदीप के छात्र-छात्राओं ने स्किट, मॉडल एवं पोस्टर के माध्यम से तम्बाकू के दुष्प्रभावों को प्रदर्शित किया

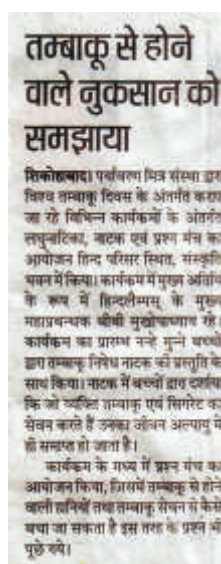
तम्बाकू मुक्ति अभियान के अंतर्गत पर्यावरण मित्र, यंग स्कालर्स एवं ज्ञानदीप विद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में छात्र-छात्राओं के मध्य तम्बाकू से होने वाले दुष्परिणामों एवं उसके निदानों के बारे में जागरूक करने की दृष्टि से लघुनाटिका, मॉडल एवं पेन्टिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

छात्र-छात्राओं ने अपने-अपने कलात्मक ढंग से तम्बाकू के दुष्प्रणामों को अपने नाटक, मॉडल एवं पेन्टिंग के जरिए से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डा. ए.के. आहूजा ने कहा "हमें बचपन से ही बच्चों को तम्बाकू के दुष्परिणाम के बारे में जानकारी देनी चाहिए जिससे बच्चे बड़े होकर गलत रास्ते पर न जायें और हमारा देश तम्बाकू रहित देश बन सके।"

ज्ञानदीप विद्यालय में टीशर्ट एवं पेन्टिंग प्रतियोगिता आयोजित की गयीं, जिसमें छात्र-छात्राओं ने उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डा. जितेन्द्र सिंह यादव ने कहा कि "विद्यार्थी हमारे देश का भविष्य हैं तम्बाकू, सिगरेट

जैसे विषैले पदार्थों से बचने के लिये, विद्यार्थियों को समय-समय पर जागरूक किया जाए जिससे आने वाली पीढ़ी तम्बाकू का सेवन न करे।"

कार्यक्रम में 5 यू.पी. एन. सी. सी. बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर एन. के. तेवतिया एवं ज्ञानदीप की निर्देशिका डा. रजनी यादव ने विद्यार्थियों का उत्साह वर्धन किया।



## शिकोहाबाद जागरण

### बच्चों ने नाटकों के जरिए तंबाकू से खतरें बताए

शिकोहाबाद : पर्यावरण मित्र संस्था द्वारा विश्व तम्बाकू दिवस के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने तम्बाकू के दुष्परिणामों के बारे में जागरूक करने के लिए नाटक प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डा. जितेन्द्र सिंह यादव ने कहा कि "विद्यार्थी हमारे देश का भविष्य हैं तम्बाकू, सिगरेट जैसे विषैले पदार्थों से बचने के लिये, विद्यार्थियों को समय-समय पर जागरूक किया जाए जिससे आने वाली पीढ़ी तम्बाकू का सेवन न करे।"



## An experiment with nature's colours and an awareness of conservation of water and air

This year, the Holi festival presented unique ideas on how to use natural colours. This was done through a poster campaign in colleges and universities in a few towns of India. Similar messages were also posted on social media websites and shared with several associations and media professionals connected with environment.

Paryavaran Mitra sent out inspiring messages to educational institutions urging the students to follow a few guidelines:

- Use natural colours made from turmeric, Harsingar bark, gulmohar petals, spinach and coriander leaves. These do not damage our skin, eyes or health and are completely safe. Do not waste water and achieve this by playing with dry colours.
- Please refrain from forcing people to play Holi if they show any reluctance
- Avoid tobacco and alcohol consumption on this special day.
- No green tree should be cut down to burn the Holi pyre. Only deadwood or fallen twigs and branches to be used.
- Holi is a cultural festival. Let us celebrate this with laughter, poetry, dance and other cultural activities that bring happiness to all around us.
- Make sure we don't litter our environment.

E-card that was created and sent to Universities and Schools



## प्राकृतिक रंगों के प्रयोग तथा वन एवं जल संरक्षण के लिये जागरूकता

होली के अवसर पर प्राकृतिक रंगों के बनाने के तरीके, उसके प्रयोग करने के लिये पर्यावरण मित्र ने जनपद के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों— में संदेश युक्त पोस्टर लगाये।

इससे सम्बन्धित ई-कार्ड सोशल मीडिया के माध्यम से पर्यावरण मित्र के सदस्यों एवं संगठनों, संस्थाओं, पत्रकारों इत्यादि को भेजा गया।

पर्यावरण मित्र ने विद्यालयों/महाविद्यालयों को प्रेषित पत्र के माध्यम से निम्न संदेश दिये:

- वे अपने पास-पड़ोस एवं समाज में होली मनाते समय रासायनिक रंगों का प्रयोग नहीं करेंगे। प्रकृति प्रदत्त रंग टेसू, हरसिंगार की छाल, गुलमोहर, हल्दी, धनियां एवं पालक के पत्ते आदि स्वास्थ्य, आँखों, त्वचा तथा पर्यावरण के लिए उपयुक्त हैं, उन्हीं प्राकृतिक वस्तुओं का प्रयोग करेंगे। जहाँ तक हो सके केवल सूखे रंगों से ही होली खेलेंगे। पानी बर्बाद नहीं करेंगे।
- जो होली नहीं खेलना चाहते हैं उन पर जबरदस्ती रंग नहीं डालेंगे।
- इस अवसर पर किसी नशीले पदार्थ का सेवन नहीं करेंगे।
- होली जलाने के लिए हरा वृक्ष नहीं काटेंगे। पुरानी सूख गयी डाल, उपले (कण्डे), लकड़ी इत्यादि का कम से कम प्रयोग कर पर्यावरण की रक्षा करेंगे।

- होली सांस्कृतिक पर्व है, कविता, गीत-गायन और शालीन हास्य-व्यंग्य आदि के साथ हर्षोल्लास से मनाते हुए इसकी शुचिता बनाये रखेंगे।
- कहीं भी कूड़ा-करकट, गंदगी आदि न फैलाएं।

विद्यालय एवं महाविद्यालयों में भेजे गये ई-कार्ड





Thirst for cleanliness

बुझायें प्यास स्वच्छता की

## World Water Day celebrations - a rally in Bateshwar by Paryavaran Mitra and a Painting Contest at Hind Parisar

Paryavaran Mitra and Nadi Mitra Mandal jointly worked in an endeavour to celebrate World Water Day by hosting a rally of students to spread the message of a clean Yamuna river in Bateshwar. The students created an awareness around conservation of water and prevention of water pollution.

Kiran Bajaj, President, Paryavaran Mitra took an oath with students and residents of Bateshwar to keep the river free from impurity and use its water sparingly.

The message was conveyed through a painting exhibition by the students and children. These were appreciated by Shri Uday Pratap Singh, President of Hindi Sansthan and Shri Umashankar Sharma. They presented the winners of the contest with prizes from Parayavaran Mitra. Shri Singh expressed his admiration at the knowledge and awareness created by the young generation.



Smt. Kiran Bajaj spearheading and encouraging the Bateshwar Rally

बटेश्वर मन्दिर परिसर में जल संरक्षण चेतना रैली में उत्साह बढ़ाती श्रीमती किरण बजाज



The contestants with the judging panel

प्रतिभागी बच्चों के साथ निर्णायक मण्डल

## पर्यावरण मित्र द्वारा विश्व जल दिवस 2014 पर बटेश्वर में रैली एवं हिन्द परिसर में पेन्टिंग प्रतियोगिता का आयोजन

विश्व जल दिवस के अवसर पर बटेश्वर में यमुना जल को शुद्ध एवं प्रदूषण मुक्त रखने के लिये 'पर्यावरण मित्र' एवं 'नदी मित्र मण्डली' के संयुक्त तत्वावधान में विद्यालयीय बच्चों द्वारा रैली निकाली गई। रैली में बच्चों ने जल संरक्षण एवं जल प्रदूषण न करने के संदर्भ में संदेश युक्त नारों के माध्यम से लोगों को जागरूक किया।

श्रीमती किरण बजाज ने यमुना तट पर बच्चों व नागरिकों द्वारा यमुना जी को स्वच्छ रखने, जलप्रदूषण न करने एवं आवश्यकतानुसार पानी का प्रयोग करने का संकल्प दिलाया। यमुना तट पर उनकी कविता 'पानी की कहानी' का बच्चों एवं उपस्थित नागरिकों के साथ गायन किया गया।

जलसंरक्षण विषय पर पेन्टिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बच्चों ने पेन्टिंग के माध्यम से जल संरक्षण एवं उसकी उपयोगिता के महत्व को दर्शाया।

बच्चों की पेन्टिंग को उ. प्र. हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष श्री उदयप्रताप सिंह एवं शिक्षाविद श्री उमाशंकर शर्मा द्वारा गहनता पूर्वक जांच किया गया।

प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त विजेताओं को उ. प्र. हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष श्री उदयप्रताप सिंह एवं शिक्षाविद श्री उमाशंकर शर्मा द्वारा पर्यावरण मित्र संस्था के माध्यम से पुरस्कृत किया गया। श्री उदयप्रताप सिंह ने जल संरक्षण जैसे संवेदनशील विषय पर बच्चों की सोच एवं उनकी कृतियों को सराहते हुए कहा कि वर्तमान पीढ़ी जलसंरक्षण के विषय में जागरूक हो रही है।



With the prize winners- Smt. Kiran Bajaj, Shri UdayPratap Singh and Shri Umashankar Sharma.

पेन्टिंग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान का चयन करते दायें से श्रीमती किरण बजाज, श्री उदय प्रताप सिंह, श्री उमाशंकर शर्मा





Thirst for cleanliness

बुझायें प्यास स्वच्छता की

## A call to protect our forests, soil and water bodies on World Environment Day

Residents of Fatehpur village donated their time and effort to clean a heritage pond in their own territory to mark World Environment Day.

The Talab Punarjivan group joined hands with the enthusiastic residents of the village to bring this project together. The group worked towards strengthening the retaining boundary walls of the pond and enable conservation of the water without damaging the walls.

This project has been successfully implemented by Paryavaran Mitra with unconditional support from residents of the village, NGOs and the Gram panchayat. Many such lakes and ponds can be saved from pollution if several teams join hands to work together. The water in these lakes can be maintained at a healthy level as well.

Smt. Kiran Bajaj, President, Paryavaran Mitra highlighted the need to save water bodies with heritage value which will preserve the environment as well as our culture. This will also work towards solving the problem of water shortage in many villages.



Village folks cleaning the lake.

## विश्व पर्यावरण दिवस पर जल, जंगल, जमीन को संरक्षित करने का आह्वान

विश्व पर्यावरण दिवस पर तालाब पुनर्जीवन अभियान के तहत शिकोहाबाद तहसील के ग्राम फतेहपुर कर्खा में तालाब की ग्रामवासियों के सहयोग से श्रमदान कर सफाई की।

संस्था एवं ग्रामसभा के सहयोग से ग्रामीणवासियों ने इस ऐतिहासिक तालाब के गहरीकरण एवं उसे साफ स्वच्छ रखने के लिए उत्साह के साथ श्रमदान किया। संस्था ने तालाब की चहारदीवारी को संरक्षित रखने के लिए धनराशि व्यय कर जे.सी.बी. से तालाब का सामान्य गहरीकरण कराकर उसकी मिट्टी को चहारदीवारी के किनारे-किनारे डाला जिससे कि तालाब में पानी रहने पर उसके जल दबाव से प्रतिकूल असर न पड़े एवं जलसंरक्षण भी हो सके।

पर्यावरण मित्र ग्राम सभा एवं ग्रामवासियों के अनवरत सहयोग से इस तालाब को जलसंरक्षण एवं इसे व्यवस्थित एवं सुन्दर, सरोवर का रूप देने का प्रयास कर रहा है। संस्था के इस प्रयास में सरकार, समाज एवं संगठनों का सहयोग मिल रहा है। संस्था का मानना है कि इस तरह के पुरातन तालाबों को अंगीकृत कर जलसंरक्षण एवं संवर्धन के लिए तथा अतिक्रमण एवं कब्जे से बचाकर धरोहर के रूप में सुरक्षित रखने का प्रयास किया जाना चाहिए। जिससे गांव एवं उस क्षेत्र की

पानी की समस्या से निजात पायी जा सकती है तथा भूजल का स्तर भी बढ़ाया जा सकता है और उस क्षेत्र के पर्यावरण में भी सुधार हो सकता है।

पर्यावरण मित्र अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने आह्वान किया, “हम अपने पुरातन तालाबों को संरक्षित एवं स्वच्छ रखकर अपनी संस्कृति एवं प्रकृति की रक्षा कर सकते हैं एवं जल संकट की समस्या से निजात पा सकते हैं।”



Removing shrubs in the lake by residents of the village.

तालाब में खड़ी झाड़ियों को साफ करते ग्रामीण।



Members of the village after cleaning the lake.

श्रमदान के पश्चात् ग्रामीण भाई-बहन।





Thirst for cleanliness

बुझायें प्यास स्वच्छता की

The residents of the village as well as past and current members of the Gram Panchayat appreciated the efforts of the organisation. Members of Paryavaran Mitra held discussions with these groups and appealed to them to keep their lakes clean and beautiful.



ग्रामवासियों ने संस्था के इस प्रयास की सराहना की एवं ग्राम पंचायत के कई पूर्व प्रधान तथा वर्तमान प्रधान सहित ग्रामवासियों ने उत्साह के साथ इस कार्यक्रम में अपना योगदान दिया। पर्यावरण मित्र ने ग्रामवासियों के साथ गोष्ठी कर तालाब को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने की अपील की।

### पर्यावरण मित्र संस्था ने तालाबों की कराई सफाई

फतेहपुर कला में तालाब की कराई सफाई करने वाले ग्रामीण।

फतेहपुर कला में तालाब की कराई सफाई करने वाले ग्रामीण।

### रासायनिक को छोड़ जैविक खाद अपनाएं

अमर उजाला ब्यूरो

शिकोहाबाद। पर्यावरण मित्र संस्था द्वारा जैविक उत्पाद प्रदर्शनी का आयोजन हिंदू लैक्स गेट नं. 2 पर किया गया। मेले में जैविक उत्पादों की बिक्री के साथ-साथ उनके उत्पाद के तरीके एवं लाभ के बारे में जानकारी दी गई।

प्रदर्शनी में जैविक खादों से तैयार विभिन्न जैविक उत्पाद जालू, प्यास, गेट, टॉले, बालर, राई, अलसी, आलू, काली-पीली सरसों का तेल, तिल, अलसी, विभिन्न प्रकार के फूल एवं फलदार पौधे प्रदर्शित किए गए। बताया गया आज तरह-तरह की बोझियां फैल रही हैं। इसका जैविक मेले में रासायनिक खादों से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में जानकारी दी गई।

कई विशेषज्ञों ने बताया रासायनिक खादों से उत्पन्न सस्मिलों व अनाज के उपयोग से आज दिन बोझियां बढ़ रही हैं एवं हमारी जमीन भी खराब होती जा रही है। हम सभी को जैविक खाद का उपयोग करना चाहिए। संकल्प दिनांक तारीख कुपक बंधु भरती, जल और स्वच्छता की सदी रखने के लिए रखरखन को जगाने।

पर्यावरण मित्र ने बचपन से स्वच्छता दिवस।

### जल, जंगल, जमीन को शुद्ध एवं संरक्षित रखने पर दिया जोर

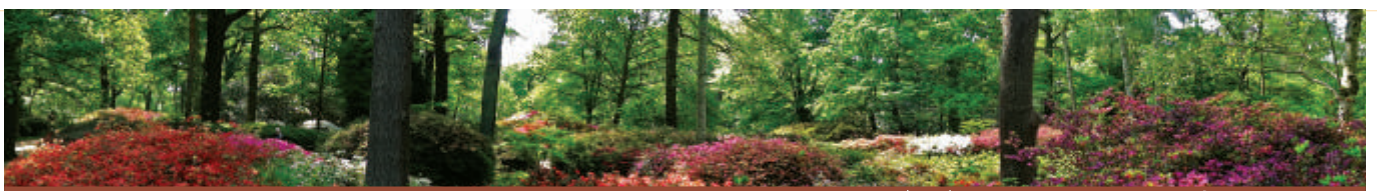
शिकोहाबाद। पर्यावरण मित्र द्वारा जैविक उत्पाद प्रदर्शनी का आयोजन हिंदू लैक्स गेट नं. 2 पर किया गया। इस जैविक मेले में जैविक उत्पादों की बिक्री के साथ-साथ उनके उत्पाद के तरीके एवं लाभ के बारे में जानकारी दी गई।

जैविक खादों से तैयार विभिन्न जैविक उत्पाद जालू, प्यास, गेट, टॉले, बालर, राई, अलसी, आलू, काली-पीली सरसों का तेल, तिल, अलसी, विभिन्न प्रकार के फूल एवं फलदार पौधे प्रदर्शित किए गए।

जैविक मेले में जैविक खादों से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में जानकारी दी गई।

Be a part of the solution, not the pollution





Restoring Land Organic Fertility

बढ़ायेँ जैविक जमीन की उर्वरक शक्ति

## Tree Plantation for Van Mahotsav 2014

This year, Paryavaran Mitra carried out a large tree plantation drive for Van Mahotsav. Students were invited and given a tour of the mini forests.

875 saplings (fruit bearing) were planted in different parts of Hind Parisar and students from schools and colleges of Shikohabad and Sirsaganj planted 350 saplings that included flowering shrubs and trees. Arborists and other specialists chatted with the students about tree plantation and its benefits.

To give momentum to the tree plantation programme, Paryavaran Mitra has established a nursery. This includes saplings of large trees such as Shisham, Neem, Mango, Kanj, Jackfruit, Putranjiva, Kachnar, Lemon, Karaonda and more. Agriculturists are encouraged to take saplings from the nursery to plant them in public places around town. 1225 trees have been planted this year.



Staff from Hind Lamps dig the soil for tree plantation

इस वर्ष पर्यावरण मित्र ने वन महोत्सव के अन्तर्गत वृक्षारोपण अभियान के तहत जुलाई से लेकर सितम्बर तक वृहद वृक्षारोपण की गतिविधियाँ संचालित कीं। वृक्षारोपण के पूर्व विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं आमजन को वन महोत्सव एवं उसकी उपयोगिता के बारे में बताया गया।

वृक्षारोपण अभियान के अन्तर्गत हिन्द परिसर के विभिन्न भागों में फलदार 875 पौधे तथा शिकोहाबाद एवं सिरसागंज के विद्यालयों—महाविद्यालयों में छायेदार एवं पुष्पों के 350 पौधे लगाए गए। विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को वृक्षारोपण के वैज्ञानिक तरीकों के बारे में विशेषज्ञों द्वारा जानकारी दी गई।

इस अभियान को गति देने के लिए एवं सभी को स्वस्थ एवं अच्छे पौधे की उपलब्धता के लिए पर्यावरण मित्र ने वन पौधशाला स्थापित की है। इसमें बड़े वृक्ष, जैसे शीशम, नीम, आम, कन्ज, कटहल, पुत्रंजीवा, बकायन, कचनार, खैर, नीबू, करौंदा इत्यादि के पौधे तैयार किए जाते हैं। इस पौधशाला से ही कृषकों को पौधे दिए जाते हैं एवं सार्वजनिक स्थानों पर वृक्षारोपण किया जाता है। इस वर्ष अब तक कुल 1225 पौधों का रोपण किया जा चुका है।

वृक्षारोपण के गड्ढे तैयार करते हिन्द लैम्पस् के पदाधिकारीगण



Watering the saplings

रोपित पौधे में पानी देते लोग



A group photo for Van Mahotsav

वन महोत्सव के साथ समूह छायांकन



वन महोत्सव के तहत किया पौधरोपण  
शिकोहबाद। वन महोत्सव के अंतर्गत पर्यावरण मित्र संस्था की अध्यक्ष  
किरण बजाज के निर्देशन में चलाये जा रहे पौधरोपण कार्यक्रम के तहत  
हिन्दू लैप्स परिसर में 140 पौधों को लगाया गया। हिन्दू लैप्स परिसर स्थित  
गुल मुहर हाउस में भी 21 नींबू के पौधे फैक्ट्री की महिलाओं द्वारा रोपित  
किए गए। बरसात के साथ अब स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, मन्दिर आदि  
स्थानों पर पौधरोपण किया जाएगा। पर्यावरण मित्र अध्यक्ष किरण बजाज ने  
अधिक से अधिक पौधरोपण का आह्वान किया।

पौधरोपण कार्यक्रम आज से शिकोहाबाद (ब्यूरो)। पर्यावरण मित्र संस्था द्वारा मंगलवार से हिंद परिसर में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। पर्यावरण मित्र द्वारा आयोजित वन महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत कार्यक्रम जारी रहेंगे। पर्यावरण मित्र संस्था की अध्यक्ष किरण बजाज ने वन महोत्सव आयोजन को व्यापक सहयोग करने को कहा है।

**महिलाओं**

फिरोजाबाद।

पौधरोपण कार्यक्रम आज से शिकोहाबाद (ब्यूरो)। पर्यावरण मित्र संस्था द्वारा मंगलवार से हिंद परिसर में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। पर्यावरण मित्र द्वारा आयोजित वन महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत कार्यक्रम जारी रहेंगे। पर्यावरण मित्र संस्था की अध्यक्ष किरण बजाज ने वन महोत्सव आयोजन को व्यापक सहयोग करने को कहा है।

**महिलाओं**

फिरोजाबाद।

# वन महोत्सव के तहत किया गया पौधरोपण

शिकोहबाद / हिन्दुस्तान संवाद

नगर में वन महोत्सव के तहत पर्यावरण मित्र संस्था द्वारा पौधरोपण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। शुभारम्भ हिन्दू प्रारम्भ स्थित श्रीमन्नारायण अन्नक्षेत्र में नीबू के पौधों को लगाकर किया गया।

पौधरोपण अभियान को बढ़ाने तथा लघु वनों के विस्तार के लिए संस्था ने अपनी वन पौधशाला निर्मित की है। इसमें गांधी, विद्यालव, अस्पताल, मन्दिर, आश्रम आदि स्थानों पर पौधरोपण किया जाएगा। मुख्य अतिथि पौधरोपण से भारत के पर्याय बनाया जा सकता है। वाता प्रदूषण का प्रमुख कारण का नष्ट होना है। हम सब खुशहाली के लिए पौ आवश्यक है। एक वृक्ष नया जीवन देने का अवसर पर पृथ्वी पर अमय दीक्षित, आरके दीपक और, सत्यवीर आदि मौजूद थे।

# वन महोत्सव के तहत किया गया पौधरोपण

शिकोहबाद / हिन्दुस्तान संवाद

नगर में वन महोत्सव के तहत पर्यावरण मित्र संस्था द्वारा पौधरोपण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। शुभारम्भ हिन्दू प्रारम्भ स्थित श्रीमन्नारायण अन्नक्षेत्र में नीबू के पौधों को लगाकर किया गया।

पौधरोपण अभियान को बढ़ाने तथा लघु वनों के विस्तार के लिए संस्था ने अपनी वन पौधशाला निर्मित की है। इसमें गांधी, विद्यालव, अस्पताल, मन्दिर, आश्रम आदि स्थानों पर पौधरोपण किया जाएगा। मुख्य अतिथि पौधरोपण से भारत के पर्याय बनाया जा सकता है। वाता प्रदूषण का प्रमुख कारण का नष्ट होना है। हम सब खुशहाली के लिए पौ आवश्यक है। एक वृक्ष नया जीवन देने का अवसर पर पृथ्वी पर अमय दीक्षित, आरके दीपक और, सत्यवीर आदि मौजूद थे।

# वन महोत्सव के तहत किया गया पौधरोपण

शिकोहबाद / हिन्दुस्तान संवाद

नगर में वन महोत्सव के तहत पर्यावरण मित्र संस्था द्वारा पौधरोपण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। शुभारम्भ हिन्दू प्रारम्भ स्थित श्रीमन्नारायण अन्नक्षेत्र में नीबू के पौधों को लगाकर किया गया।

पौधरोपण अभियान को बढ़ाने तथा लघु वनों के विस्तार के लिए संस्था ने अपनी वन पौधशाला निर्मित की है। इसमें गांधी, विद्यालव, अस्पताल, मन्दिर, आश्रम आदि स्थानों पर पौधरोपण किया जाएगा। मुख्य अतिथि पौधरोपण से भारत के पर्याय बनाया जा सकता है। वाता प्रदूषण का प्रमुख कारण का नष्ट होना है। हम सब खुशहाली के लिए पौ आवश्यक है। एक वृक्ष नया जीवन देने का अवसर पर पृथ्वी पर अमय दीक्षित, आरके दीपक और, सत्यवीर आदि मौजूद थे।

# वन महोत्सव के तहत किया गया पौधरोपण

शिकोहबाद / हिन्दुस्तान संवाद

नगर में वन महोत्सव के तहत पर्यावरण मित्र संस्था द्वारा पौधरोपण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। शुभारम्भ हिन्दू प्रारम्भ स्थित श्रीमन्नारायण अन्नक्षेत्र में नीबू के पौधों को लगाकर किया गया।

पौधरोपण अभियान को बढ़ाने तथा लघु वनों के विस्तार के लिए संस्था ने अपनी वन पौधशाला निर्मित की है। इसमें गांधी, विद्यालव, अस्पताल, मन्दिर, आश्रम आदि स्थानों पर पौधरोपण किया जाएगा। मुख्य अतिथि पौधरोपण से भारत के पर्याय बनाया जा सकता है। वाता प्रदूषण का प्रमुख कारण का नष्ट होना है। हम सब खुशहाली के लिए पौ आवश्यक है। एक वृक्ष नया जीवन देने का अवसर पर पृथ्वी पर अमय दीक्षित, आरके दीपक और, सत्यवीर आदि मौजूद थे।



**पर्यावरण मित्र ने रोपे फलदार पौधे**  
 शिकोहाबाद : पर्यावरण मित्र संस्था की अध्यक्ष किरण कज्जल के निदेशन में चलार उर रहे पौधारोपण कार्यक्रम के तहत बीमन नारायण क्षेत्र में 140 पौधों को रोपित किया। गुल मुहर में नींबू के 21 पौधे हिंदू परिसर की महिलाओं ने रोपे। बरसात के साथ-साथ अब हिंदू परिसर, सलून, फौज, अस्पताल, मंदिर परिसर आदि स्थानों पर भी पौधारोपण होगा। पर्यावरण मित्र किरण कज्जल ने सभी से हवा, पानी, चरती को बचाने एवं नालबंद धर्मिक के प्रचार से बचने पौधारोपण जरूरी है।

**पर्यावरण मित्र ने रोपे फलदार पौधे**  
 शिकोहाबाद : पर्यावरण मित्र संस्था की अध्यक्ष किरण कज्जल के निदेशन में चलार उर रहे पौधारोपण कार्यक्रम के तहत बीमन नारायण क्षेत्र में 140 पौधों को रोपित किया। गुल मुहर में नींबू के 21 पौधे हिंदू परिसर की महिलाओं ने रोपे। बरसात के साथ-साथ अब हिंदू परिसर, सलून, फौज, अस्पताल, मंदिर परिसर आदि स्थानों पर भी पौधारोपण होगा। पर्यावरण मित्र किरण कज्जल ने सभी से हवा, पानी, चरती को बचाने एवं नालबंद धर्मिक के प्रचार से बचने पौधारोपण जरूरी है।

Two women, one in an orange sari and one in a green sari, are shown planting a small tree sapling in a field. They are both wearing bangles and are focused on the task. The background shows a grassy field with some trees in the distance.

सिंहगढ़बाद (धुस्से)। उन नवोत्पन्न के अंतर्गत पर्यवर्तन मित्र संस्था ने  
 जिस लेख सिद्धा वैमल्यनगरपण अन्तर्गत 2-2-1940 पैषी को  
 सौंपित किया। हिंदू लेख परिसर स्थित गुलामगढ़ हाउस में भी 21 नौबू  
 के पीछे रखा किंग कर। संस्था अध्यक्ष विन्स बजाज ने अखण्ड  
 किया कि हवा पानी और बरती को बचाने एवं पर्यवर्तन के  
 प्रभाव से बचने के लिए सिद्धा वैमल्यनगर हाउस में। हाउस में पर्यवर्तन  
 को खोलकर हाउस में रखा।

## महिलाओं ने किया पौधारोपण

फिरोजाबाद।

यन महासंघ कार्यक्रम के अंतर्गत पर्यावरण मित्र संस्था द्वारा हिन्दू परिसर में पौधारोपण किया गया। हिंदू परिसर को महिलाओं व बच्चों ने इस कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। पौधारोपण में आंखला के 57 पौधे रोपित किए गए। इस कार्यक्रम में बच्चे भी पौधे रोपित करने के लिए उत्साहित दिखाई दिए। वन विशेषज्ञ द्वारा बच्चों और महिलाओं को पौधे लगाने का तरीका भी बताया गया। कार्यक्रम में प्रोती ओहरी, विमला सिंह, सविता शर्मा, इत्यादि महिलाएं उप



चन महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत पंचायत राज मित्र संस्था द्वारा हिन्दू परिसर में पौधारोपण किया गया। हिंदू परिसर की महिलाओं व बच्चों ने इस कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। पौधारोपण में आँवला के 57 पौधे रोपित किए गए। इस कार्यक्रम में बच्चे भी पौधे रोपित करने के लिए उत्साहित दिखाई दिए। वन विशेषज्ञ द्वारा बच्चों और महिलाओं को पौधे लगाने का तरीका भी बताया गया। कार्यक्रम में प्रीती ओहरी, विमला सिंह, सविता शर्मा, इन्प्रादि महिलाएं उपस्थित थीं।

**पंचायत राज मित्र ने रोपे पौधे**

पंचायत राज मित्र संस्था द्वारा हिन्दू परिसर में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में पौधे लगाती महिलाएँ।

पर्यावरण मित्र ने रोपे पौधे

सिंह, साबुत राभा,  
इन्द्रादि महिलाएं उप  
16, शास्त्राचार्य  
सह, पुष्पेन्द्र राभा

पर्यावरण मित्र ने रोपे पौधे

शिवगोदावरी (झुंसी)। वन महोत्सव के अंतर्गत पर्यावरण मित्र संस्था द्वारा कार्यवाही जा रही कुशीरपुर के जंगम में हिंदू लेकमस् के नन्नालायन क्षेत्र में नौसू के पौधे रोपित किये कये। वृक्ष कुशीरपुरण कार्यक्रम में हिंदू लेकमस् के पर्यावरणिकरिबे द्वारा बड़े उत्साह के साथ पौधा रोपित किये गए। पर्यावरण मित्र अध्यक्ष किरण बज्जज ने कहा कि जल संरक्षण के लिए कुशीरपुरण अति आवश्यक है। हिंदू लेकमस् के मुख्य महसुबधक येथी नुसुपाप्राध्याय ने कार्यक्रम की सारांजन करती हुए कहा कि नौसूक खनिज कज करने के लिए ऐसी गांथिकरण आवश्यक है। पौधारोपण कार्यक्रम में एचडी राभा, एलके रावीर, शरिकांत, अरुके सिंह, येथी सिंह, दितीप सिंह, उमम दीक्षित ने पौधे रोपित किये।



वन महोत्सव आज से शिकोहाबाद। एक जुलाई से पर्यावरण मित्र द्वारा वन महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इसके तहत पूरी बरसात तक संस्था द्वारा पौधरोपण किया जाएगा। पर्यावरण मित्र की अध्यक्ष किरन बजाज ने लोगों से अपील की है कि सभी लोग बरसात में एक पौधे को अवश्य लगाएं।

वन महोत्सव आज से शिकोहाबाद। एक जुलाई से पर्यावरण मित्र द्वारा वन महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इसके तहत पूरी बरसात तक संस्था द्वारा पौधरोपण किया जाएगा। पर्यावरण मित्र की अध्यक्ष किरन बजाज ने लोगों से अपील की है कि सभी लोग बरसात में एक पौधे को अवश्य लगाएं।

**वन महोत्सव में सेपे जाएंगे पांच हजार पोथे**  
 शिकोहबाद : पर्यावरण मित्र संस्था द्वारा जुलाई माह में 'वन महोत्सव' कार्यक्रम चलाया जाएगा। जिसमें पांच हजार पोथे सेपे कर लक्ष्य रखा गया है। लोगों को पर्यावरण संरक्षण के जागरूक भी किया जाएगा। संस्था की अध्यक्ष किशोर बजाज ने कहा कि वर्तमान समय में पौधरोपण जीवधारियों के लिये अत्यंत आवश्यक हो गया है। अनियंत्रित विकास, कटन एवं स्थायी मनोवृत्ति कारण हवा-पानी प्रदूषित हो गए हैं। 1950 में हमारे देश के 40 फीसदी भू-भाग वृक्षों से आवृत था। जो अब घटकर 20 फीसदी रह गया है। इस अवधि में जहां जनसंख्या में 400 फीसदी की वृद्धि हुई वहीं वनावरण में 50 फीसदी की कमी हो गई है। ये पर्यावरण के लिए घातक है। बीमती बजाज ने कहा कि हवा, पानी और धरती को बचाने का एक मात्र सरल पौधरोपण है। उन्होंने लोगों से अपील की है कि जुलाई से लेकर सितंबर तक पौधरोपण करें। खेत, खलिहान, बगीचे, सड़क किनारे, गांव, शहर आदि में से अधिक पौधारोपण करें और उनका संरक्षण करें।

**वन महोत्सव में सेपे जाएंगे पांच हजार पोथे**  
 शिकोहबाद : पर्यावरण मित्र संस्था द्वारा जुलाई माह में 'वन महोत्सव' कार्यक्रम चलाया जाएगा। जिसमें पांच हजार पोथे सेपे कर लक्ष्य रखा गया है। लोगों को पर्यावरण संरक्षण के जागरूक भी किया जाएगा। संस्था की अध्यक्ष किशोर बजाज ने कहा कि वर्तमान समय में पौधरोपण जीवधारियों के लिये अत्यंत आवश्यक हो गया है। अनियंत्रित विकास, कटन एवं स्थायी मनोवृत्ति कारण हवा-पानी प्रदूषित हो गए हैं। 1950 में हमारे देश के 40 फीसदी भू-भाग वृक्षों से आवृत था। जो अब घटकर 20 फीसदी रह गया है। इस अवधि में जहां जनसंख्या में 400 फीसदी की वृद्धि हुई वहीं वनावरण में 50 फीसदी की कमी हो गई है। ये पर्यावरण के लिए घातक है। बीमती बजाज ने कहा कि हवा, पानी और धरती को बचाने का एक मात्र सरल पौधरोपण है। उन्होंने लोगों से अपील की है कि जुलाई से लेकर सितंबर तक पौधरोपण करें। खेत, खलिहान, बगीचे, सड़क किनारे, गांव, शहर आदि में से अधिक पौधारोपण करें और उनका संरक्षण करें।





Restoring Land Organic Fertility

बढ़ायेँ जैविक जमीन की उर्वरक शक्ति

## Van Pooja on International Forest Day

Kiran Bajaj, President of Paryavaran Mitra led a Pooja of trees in Vrindavan and vowed to work towards saving our forests on International Forest day. She requested the new generation to learn from Nature and look after her forests and plant more trees. This will lead to curbing global warming and reduce environmental pollution.

The holy land of Vrindavan is being stripped of its trees making way for concrete jungles. We need the thinkers of this beautiful city to come together and save the forests. There is no Vrinda (cluster of flowers) nor Van (forest) in Vrindavan anymore!

On this day, Pooja was offered to ten mini forests in Hind Parisar. Women and children were told about the importance of trees in our lives.

## विश्व वन दिवस पर वनों का किया गया पूजन

‘पर्यावरण मित्र’ अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने वृन्दावन में वृक्ष पूजन कर वन दिवस पर वनों की रक्षा का संकल्प दोहराया। उन्होंने आह्वान किया है कि “वर्तमान पीढ़ी को अरण्य संस्कृति से सीख लेते हुये वनों की रक्षा करना एवं अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर वन आवरण के क्षेत्रफल को बढ़ाना चाहिए। इससे हमें शुद्ध हवा, जल संरक्षण करने में सहायता मिलेगी और ग्लोबल वार्मिंग कम करने का यही एकमात्र उपाय है।”

वृन्दावन की पावन भूमि पर वनों और वृक्षों को मिटाया जा रहा है और सीमेंट के जंगल बन रहे हैं, यह जरूरी है कि बुद्धिवादी, शिक्षित, गुरुजन इस पर विचार कर वृन्दावन को बचायें क्योंकि वृन्दावन में न वृन्दा है न वन।

इस दिवस पर हिन्द परिसर में विभिन्न प्रजातियों से युक्त लगभग दस लघु वनों जानकीदेवी, सुन्दर वन, कमलनयन कानन, संदीप उद्यान, राधा निकुंज इत्यादि में महिलाओं द्वारा वृक्षों का श्रद्धा भाव के साथ पूजन किया गया।

इस अवसर पर महिलाओं एवं स्कूली बच्चों को वन दर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत जीवन में पौधों के लाभ, उपयोग एवं महत्व के बारे में जानकारी दी गई।



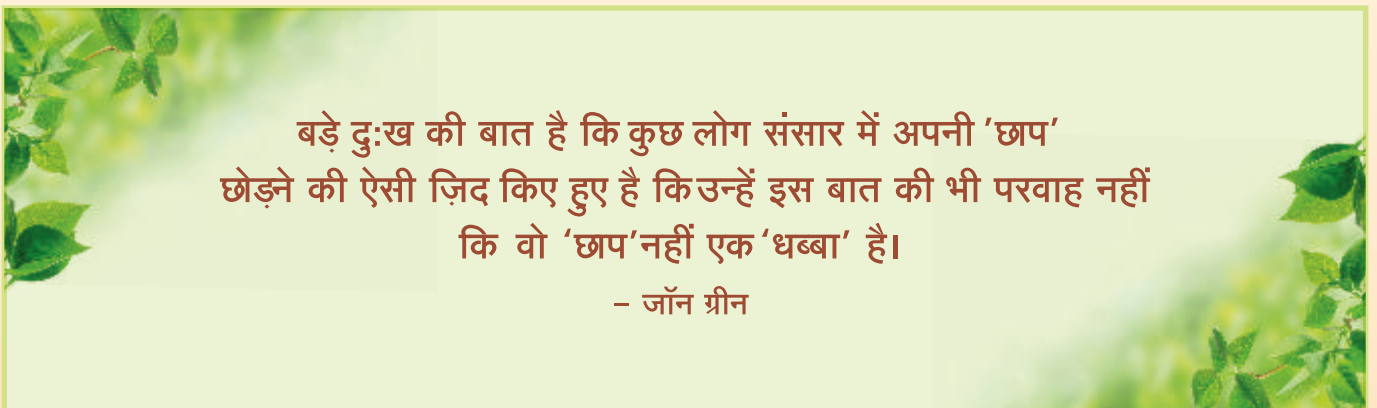
Paryavaran Mitra performing Pooja of trees on International Forest Day

विश्व वन दिवस पर वृक्ष पूजन करते पर्यावरण मित्र।



Women taking an oath to save trees

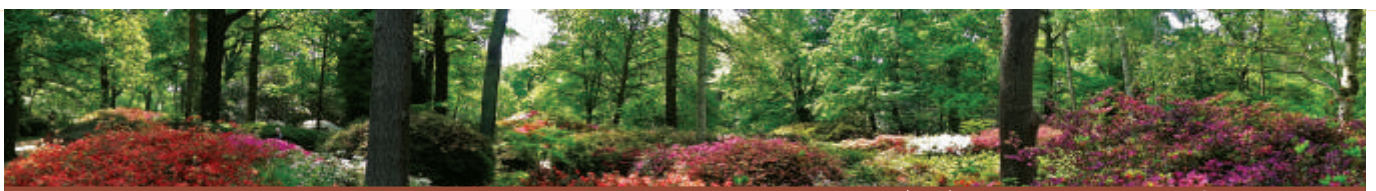
वन को बचाने का संकल्प लेती महिलाएं।



बड़े दुःख की बात है कि कुछ लोग संसार में अपनी ‘छाप’  
छेड़ने की ऐसी ज़िद किए हुए हैं कि उन्हें इस बात की भी परवाह नहीं  
कि वो ‘छाप’ नहीं एक ‘धब्बा’ है।

– जॉन ग्रीन





Restoring Land Organic Fertility

बढ़ायेँ जैविक जमीन की उर्वरक शक्ति

## Report on World Earth Day

On this day, school children in Shikohabad celebrated by participating in a poster making contest and a quiz programme.

Global Warming and ill effects of chemical pesticides were two topics covered by the posters.

The quiz programme was very successful in imparting knowledge about our environment issues.

The winners of the contests received prizes from Smt. Kiran Bajaj.

## विश्व पृथ्वी दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम



Worshipping of Earth

पृथ्वी पूजन का दृश्य



Winners receiving prizes from Kiran Bajaj

विजेता प्रतिभागी को पुरस्कृत करती श्रीमती किरण बजाज

पृथ्वी दिवस पर 'पर्यावरण मित्र' द्वारा स्कूली बच्चों के मध्य पोस्टर मेकिंग तथा प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आयोजन के अंतर्गत बच्चों ने वर्तमान परिवेश में अत्यधिक तापमान एवं रासायनिक पदार्थों से पृथ्वी को हो रहे नुकसान को अपनी पेन्टिंग के माध्यम से प्रस्तुत किया।

इस पेन्टिंग प्रतियोगिता के माध्यम से स्कूली बच्चों ने अपनी कला को प्रस्तुत कर पृथ्वी को हानि पहुंचाने वाले उपकरणों, रासायनिक पदार्थों के दुष्प्रभाव एवं पृथ्वी को ग्लोबल वार्मिंग से बचाने के उपायों के बारे में बारीकियों से जनमानस को अवगत कराया।

इस अवसर पर पर्यावरण प्रश्नोत्तरी का आयोजन कर वर्तमान में हो रहे पर्यावरण क्रियाकलापों से अवगत कराया गया एवं बच्चों के पर्यावरण संबंधी ज्ञान में वृद्धि की गयी।

### Poster Making and Quiz Contest Winners

**First** — • Falguni  
• Ayush  
• Pushkar Ohri

**Second** — • Amrisha  
• Archie Gangawar  
• Khushi Yadav

**Third** — • Siddhi Sharma  
• Vipul Gupta  
• Ashish Yadav

### पोस्टर मेकिंग और प्रश्नमंच प्रतियोगिता के विजेता

**प्रथम** — • फाल्गुनी (उच्च वर्ग)  
• आयुष (मध्यम वर्ग)  
• पुष्कर औहरी (निम्न वर्ग)

**द्वितीय** — • अमरीशा (उच्च वर्ग)  
• आर्ची गंगवार (मध्यम वर्ग)  
• खुशी यादव (निम्न वर्ग)

**तृतीय** — • सिद्धी शर्मा (उच्च वर्ग)  
• विपुल गुप्ता (मध्यम वर्ग)  
• आशीष यादव (निम्न वर्ग)



Group picture of Painting contest participants

पेंटिंग प्रतियोगिता के प्रतिभागी बच्चों के साथ समूह छायांकन



Winners with their paintings

प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले छात्र अपनी पेन्टिंग के साथ

**पृथ्वी के महत्व को समझें : किरण बजाज**  
शिकोहाबाद। पृथ्वी दिवस के अवसर पर पर्यावरण संस्था की अध्यक्ष किरण बजाज ने पृथ्वी को बचाने के लिए हमारे पास जो उपाय हैं, उन्हें बताने के लिए कहा कि पृथ्वी हमारी माँ है।  
इसके महत्व को समझें इस अवसर पर किरण बजाज ने कहा कि चार दशक पूर्व अमेरिका ने 22 अप्रैल के दिन को पृथ्वी दिवस घोषित किया। लेकिन भारतवर्ष में 'श्रेश्ठीयों' और 'मुनियों' ने इसके महत्व को बहुत पहले ही समझ लिया था।  
घर निर्माण व अन्य शुष्क कार्यों से पूर्व पृथ्वी का पूजन हमारे यहां एक परंपरा है। उन्होंने कहा कि पृथ्वी ही ऐसा गृह है जिस पर हवा, पानी है। इसके साथ ही यहां जीवधारी रह सकता है। यहां जंगल काटकर कंकरीट के जंगल खड़े किये जा रहे हैं। भूगर्भ विषाक्त हो रहा है। इसे रोकना होगा और अधिक से अधिक संख्या में वृक्षारोपण करना होगा।

### पर्यावरण मित्र ने किया कार्यक्रम

पेड़ों को प्रदूषण से बचाएँ: किरण बजाज

कारण है। नुकसान हो रहा है। पृथ्वी पर जो हमारे जीवन, स्वास्थ्य और विकास के लिए हवा, पानी, भोजन, वनस्पति का स्रोत है। पृथ्वी को बचाने के लिए हमें अपने जीवन में बदलाव लाना होगा। पृथ्वी को बचाने के लिए हमें अपने जीवन में बदलाव लाना होगा। पृथ्वी को बचाने के लिए हमें अपने जीवन में बदलाव लाना होगा।





## A discussion on Climate change and a solution for global warming

A Mixed forest is the only solution for global warming. On the occasion of August Kranti Day, Jagat Singh 'Jungli' was invited to talk about this issue.

Jagat Singh 'Jungli' pointed out that the existing land for forests was forever reducing and the best way to manage the situation was to grow more plants under existing trees. He discussed ways of composting and saving water to make the most of available resources. Birds could only survive in forests and it was crucial to have a Mixed forestry plan to save forest life.

The godson of our Mother Earth said we could save our planet from global warming if we practise Mixed forestry in the same way Shri Krishna saved Yamuna from Kaliyanag. He demonstrated easy methods of achieving this goal through his presentation with examples of his work in Rudraprayag and Kotmala. This model was adopted by an organisation called Active Remedy in the UK and there were plans to promote it in ten spots in India.



A presentation by Jagat Singh 'Jungli'

जगत सिंह 'जंगली' का व्याख्यान एवं पावर प्वाइन्ट प्रजेंटेशन की प्रस्तुति



Jagat Singh 'Jungli' and Paryavaran Mitra at Sanskriti Bhavan. संस्कृति भवन प्रांगण में अतिथि जगत सिंह 'जंगली' एवं पर्यावरण मित्र

## जलवायु निर्माण एवं ग्लोबल वार्मिंग का समाधान – व्याख्यान

जलवायु निर्माण एवं ग्लोबल वार्मिंग का एकमात्र समाधान है मिश्रित वन – जगत सिंह 'जंगली'

अगस्त क्रान्ति दिवस के अवसर पर पर्यावरण मित्र संस्था ने मिश्रित वनों के महानायक श्री जगत सिंह 'जंगली' को आमंत्रित कर 'मिश्रित वन: जलवायु निर्माण एवं ग्लोबल वार्मिंग का समाधान विषय पर' व्याख्यान एवं पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन का आयोजन किया।

जंगल के राजा जगत सिंह 'जंगली' ने जलवायु निर्माण और ग्लोबल वार्मिंग समाधान के लिए मिश्रित वन को ही एकमात्र विकल्प बताया और कहा कि भूमि लगातार कम होती जा रही है इसलिए हमें बड़े पेड़ों के नीचे छायादार पौधे या कृषि करने के लिए प्रयास करने चाहिए जिससे हमारी आय का एक नया स्रोत उत्पन्न होगा। उन्होंने कम्पोस्ट पिट पर खेती करने की विधि को समझाया और पानी के स्रोत को बचाने के उपाय बताये। पदम के पौधे को ज्यादा से ज्यादा लगाया जाए जो जलवायु परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान देता है। 'जंगली' ने पक्षियों के रहने तथा उनके भोजन एवं पानी के लिए वनों को सबसे अधिक महत्वपूर्ण बताया। भूमि संरक्षण एवं जंगली जीव जन्तु के संरक्षण एवं आवास के लिए मिश्रित वनों का होना अति आवश्यक है।

देवभूमि के देवपुत्र ने कहा कि 'मिश्रित वन' की परम्परा से जुड़ने वाली वर्तमान एवं भावी पीढ़ी ऑक्सीजन की फैक्ट्री को निर्मित करके ग्लोबल वार्मिंग की इस तपन का वैसे ही समूल नाश करेगी जैसे



A group photo with Jagat Singh 'Jungli'

जगत सिंह 'जंगली' के साथ समूह छायांकन



Jagat Singh 'Jungli' And his son Dev Raghavendra with plants from the Himalayas.

हिमालय के पौधों के साथ जगत सिंह 'जंगली' एवं उनके पुत्र देव राघवेन्द्र





He emphasised that those groups that used the Mixed forest model should be awarded Green Bonus points. The Himalayas could also be protected with the use of this kind of forestry.

Jagat Singh 'Jungli' answered many queries presented by the students attending the programme. He was honoured by Paryavaran Mitra with a garland and gifts.

Kiran Bajaj expressed her gratitude at the new direction offered by Jagat Singh 'Jungli'. She said the present and future generations would be inspired by his thoughts and actions.

An exhibition of Himalayan fauna was organised by Jagat Singh 'Jungli' that included Rudraksh, Deodar etc. After the programme, he planted a few amaltas and jamun in the Hind Parisar park.

The programme was attended by students and teachers from Shikohabad, Sirsaganj and Jasrana. Members from various social organisations and some prominent citizens were also present.

भगवान श्रीकृष्ण ने यमुना को कालियानाग से मुक्त किया था। उन्होंने प्रजेन्टेशन के माध्यम से कोटमला, रुद्रप्रयाग (उत्तरांचल) में स्वयं के द्वारा किए गए प्रयोग एवं कार्यों के माध्यम से किस प्रकार से मिश्रित वन आम व्यक्ति के जन-जीवन में और जलवायु निर्माण में सफल सिद्ध हुआ हैं इसका उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि मिश्रित वन के इस मॉडल को इंग्लैंड के एक संगठन 'एक्टिव रेमेडी' ने भारत और इंग्लैंड के 10 स्थानों पर नये मिश्रित वनों को निर्मित करने का निश्चय किया है।

उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने मिश्रित वन निर्मित किए हैं उन्हें ग्रीन बोनस दिया जाना चाहिए। जल, जंगल, जमीन की नीतियों में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण जलवायु में हो रहे परिवर्तनों को रोकने के लिए विकास की ऐसी संरचना बननी चाहिए जिससे इसका निदान हो सके। जलवायु परिवर्तन से आहत हिमालय का उपचार केवल मिश्रित वनों से किया जा सकता है। मिश्रित वन ही जंगलों की जैव विविधता में आ रही कमी की भरपाई कर सकते हैं।

श्री जगत सिंह 'जंगली' ने विभिन्न विद्यालय-महाविद्यालयों से आए छात्र-छात्राओं द्वारा मिश्रित वनों, विकास और पर्यावरण एवं जंगलों के बारे में ढेर सारे प्रश्नों का कुशलता पूर्वक उत्तर दिया।

मिश्रित वन के महानायक 'जंगली' को पर्यावरण मित्र द्वारा वैजयन्ती माला, अंगवस्त्रम्, धनराशि भेंट कर सम्मानित किया गया।

पर्यावरण मित्र अध्यक्ष किरण बजाज ने कहा कि जगत सिंह 'जंगली' के आगमन और व्याख्यान से पर्यावरण मित्र को एक नई दिशा मिलेगी। प्रकृति और संस्कृति के संरक्षण के बारे में उनके अनुभवों से वर्तमान एवं भावी पीढ़ी को प्रेरणा मिलेगी।

मंच पर उपस्थित महानुभावों ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि हमें जगत सिंह 'जंगली' के अनुभवों से सीखकर एवं ऐसे कार्य करने वाले लोगों का प्रोत्साहन देकर पहाड़ों, जंगलों एवं बंजर भूमि को बचाने का कार्य करना चाहिए।

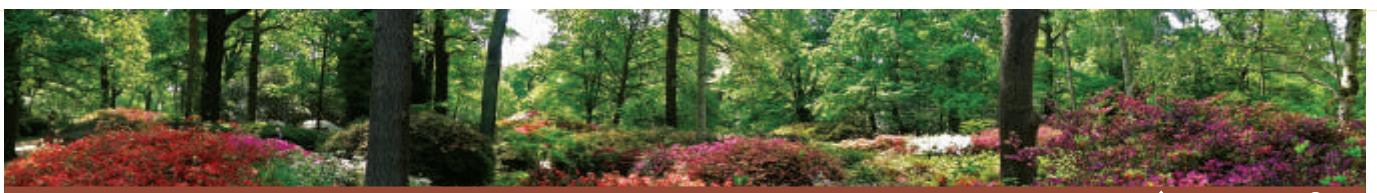
जगत सिंह 'जंगली' अपने साथ हिमालय के पौधे रुद्राक्ष, देवदार आदि लेकर आये जिसकी प्रदर्शनी लगाई गई जिसका सभी लोगों ने अवलोकन किया।

कार्यक्रम के पश्चात् मिश्रित वनों के महानायक जगत सिंह 'जंगली' ने हिन्द परिसर के विभिन्न प्रकृत्यों का अवलोकन किया एवं कमलनयन कानन में अमलतास, जामुन इत्यादि के पौधे रोपित किए।

कार्यक्रम में शिकोहाबाद, सिरसागंज एवं जसराणा के विभिन्न विद्यालयों-महाविद्यालयों के शिक्षकगण एवं विद्यार्थी तथा सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक इत्यादि काफी संख्या में उपस्थित थे।







## Felicitation of Shri Chandiprasad Bhatt on the occasion of the 10th anniversary of Paryavaran Mitra and a talk on Environment ethics and Forest Culture

Shri Bhatt said in his speech that he was coming to Paryavaran Mitra after nine years and was heartened to see the efforts of the organisation. He emphasised the importance of environment ethics. He pointed out how sages in olden times paid respect to trees. The common man also planted trees. Trees are critical to the survival of our world. With the growth in population, our needs have increased in direct proportion to the exploitation of natural resources.

Shri Bhatt alerted his audience to the disasters of Koshi (2008), Kedarnath (2013) and Assam

## पर्यावरण मित्र के दसवें स्थापना दिवस पर श्री चण्डीप्रसाद भट्ट का सम्मान एवं वन संस्कृति पर व्याख्यान



Plantation in Chandi Prasad Udyan by Chandiprasad Bhatt.  
चण्डी प्रसाद उद्यान में वृक्ष रोपित करते चण्डीप्रसाद भट्ट।



Ambarnag & H.O. Sharma presented Samman Patra.  
चण्डी प्रसाद उद्यान से सम्बन्धित प्रमाण पत्र भेंट करते  
अम्बरनाग एवं एच.ओ. शर्मा।

‘प’र्यावरण मित्र’ के दसवें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में पर्यावरणविद् पद्मभूषण चण्डीप्रसाद भट्ट का सम्मान एवं वन संस्कृति पर व्याख्यान का आयोजन हिन्दू परिसर स्थित संस्कृति भवन में किया गया।

वन संस्कृति विषयक व्याख्यान एवं सम्मान समारोह में श्री चण्डीप्रसाद भट्ट ने कहा कि मैं 9 वर्षों बाद आया हूँ और पर्यावरण मित्र के कार्यों को देखकर मेरा चित आनंदित हुआ है।

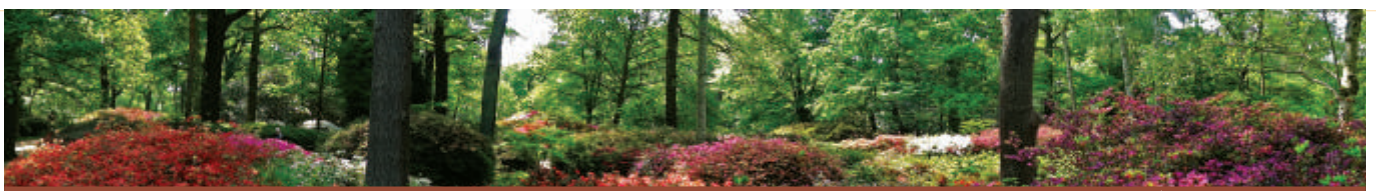
वन संस्कृति की महत्ता एवं उसकी विशेष आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि इतिहास साक्षी है, हमारे देश में वृक्षों के लगाने एवं उनके संरक्षण की परम्परा और संस्कार हमारे यहाँ रहे हैं। ऋषि मुनियों से लेकर एक आम व्यक्ति तक पेड़ लगाता है। पेड़, पूरे जीव जगत के जीवन को बरकरार रखने के लिए जरूरी है। आज हमारी आवश्यकताएं बढ़ गईं और प्राकृतिक संसाधनों का अभाव हो रहा है, जंगलों का विनाश, मिट्टी का क्षरण, खनिज का क्षरण, पानी के स्रोतों का सूखना, भू-क्षरण, भू-स्खलन इत्यादि हो रहे हैं।



Gathering in Sanskriti Bhavan hall.

सभागार में उपस्थित श्रोतागण।





and Kashmir very recently this year. This is a result of our atrocious treatment of the Himalayas. Spread over 2500 sq. kms, the grand Himalayas have a very close connection with our lives- economic, cultural and social.

There is reference to Himalayas in Bhagwat Geeta as well. Scientists have maintained that any disturbance to the balance of the mighty mountains can result in disruptions to our ecosystem all around us including the far-flung plains. These mountains host a huge variety of life systems and we need to look after the mountains, rivers, forests, water, soil and life associated with it.

In the current situation, we all need to focus our efforts to build a strong forest and eco culture to strengthen our earth. Shri Bhatt mentioned the Chipko Movement of 1973 which began with the joint strength

उन्होंने 2008 में हुई कोशी की घटना, 2013 में केदारनाथ की घटना, 2014 में कश्मीर और आसाम की घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि यह सब हिमालय के साथ हो रही ज्यादतियों और गड़बड़ियों के कारण हो रहा है।

2500 किलोमीटर क्षेत्र में फैले हिमालय के साथ हमारा पुराना सम्बन्ध है और उससे हमारा आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन जुड़ा हुआ है।

भगवान कृष्ण ने गीता में कहा कि स्थिर वस्तुओं में वह हिमालय है और वैज्ञानिक भी कहते हैं कि हिमालय सबसे कम उम्र का है, उसमें यदि किसी प्रकार असंतुलन पैदा हुआ और उसकी संवेदनशीलता के साथ छेड़-छाड़ हुई तो जीवन खतरे में होगा और पर्वतीय इलाकों से लेकर मैदानी इलाकों तक सभी लोगों को तबाही का डर होगा। हिमालय और उसकी जैव विविधता के अंतर्सम्बन्धों को बताते हुए कहा कि हिमालय, नदियां, जंगल, पानी, मिट्टी और जीवन से जुड़े पहलुओं को समझकर कार्य करने की आवश्यकता है।

उपरोक्त स्थिति में यही एकमात्र विकल्प है कि हम सभी को अपनी इच्छा शक्ति और अंतःप्रेरणा के साथ वन संस्कृति की धारा को मजबूती देकर पूरी धरती ग्रह को बचाना होगा।

उन्होंने 1973 में प्रारम्भ हुए चिपको आन्दोलन के बारे में कहा कि वह



Chandi Prasad Bhatt delivered lecture.

चण्डी प्रसाद उद्यान में वक्तव्य देते चण्डीप्रसाद भट्ट।



Samman by Dr. A.K. Ahuja & Dr. Rajani Yadav.

सम्मान करते डा. ए.के. आहूजा एवं डा. रजनी यादव



Citation presented by Dr. A.K. Ahuja & Dr. Rajani Yadav .

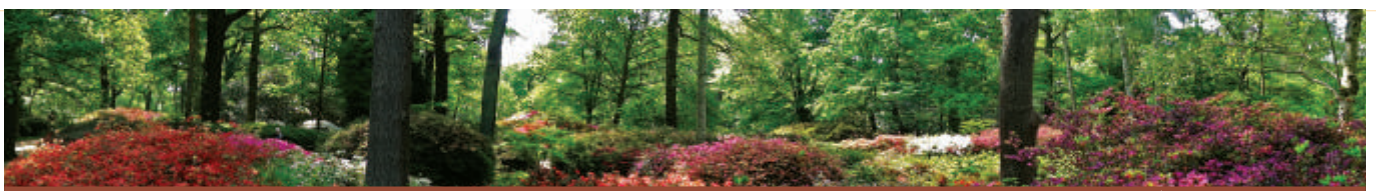
सम्मान पत्र भेंट करते डा. ए.के. आहूजा एवं डा. रजनी यादव।



Chandiprasad Bhatt delivered his views about Culture of Forest.

सभा को संबोधित करते चण्डीप्रसाद भट्ट।





of a group's will that was directed at saving our trees and forests. This group aimed to explain an idea and not force people to follow a movement.

Shri Bhatt made a power point presentation on Himalaya and its sensitive role. He covered problems in areas from Uttaranchal to Nepal and also touched upon regions of Leh and Laddakh. He encouraged everyone to protect the ecological welfare of the Himalayas, its rivers, forests, soil and people and animals. He urged all to take a page out of Paryavaran Mitra's book of efforts and learn to contribute in their own regions.

Kiran Bajaj made a live video presentation and conveyed her message of conserving water, air, soil and reducing noise pollution. She gave credit to the last ten years of Paryavaran Mitra work that has led to a significant effort in reducing pollution. She wishes that large organisations and the single individual showed equal initiative to work within their capacities to make a difference to the environment of the entire country. After all our

लोगों की इच्छा शक्ति और अन्तःप्रेरणा से प्रारम्भ हुआ एक रचनात्मक आन्दोलन था जिसमें लोगों को अपना विचार थोपना नहीं बल्कि समझाकर जंगलों और पेंडों को बचाना था। इस शब्द में ही इतनी ताकत है कि सहसा ही कोई व्यक्ति इससे जुड़ जाता था।

उन्होंने “हिमालय और संवेदनशीलता” विषय पर पॉवर प्वाइन्ट के माध्यम से हिमालयी क्षेत्र उत्तरांचल से लेकर पूर्वोत्तर एवं नेपाल तक की समस्याओं एवं उनके निदानों का जिक्र किया और ट्रांस-हिमालयन क्षेत्र लेह-लद्दाख के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि वर्तमान एवं भावी पीढ़ी ऐसे कृत्यों को करें जिससे हिमालय, गंगा, जल, मिट्टी, जंगल, संरक्षित रहें ताकि जीव-जगत का जीवन सुरक्षित रहे तथा पर्यावरण मित्र द्वारा किए जा रहे कार्यों से सीख लेकर लोग अलग-अलग जगहों पर कार्य करें।

श्रीमती किरण बजाज ने अपने लाइव वीडियो अध्यक्षीय संदेश में कहा कि पर्यावरण मित्र का मुख्य उद्देश्य विश्व के जल, वायु, भूमि एवं ध्वनि प्रदूषण को रोकना है।

पर्यावरण मित्र ने पिछले दस सालों में जल, वायु, भूमि एवं ध्वनि प्रदूषण रोकने की दिशा में अहम कार्य कर दिखाया है एवं यह प्रयोग बहुत हद तक सफल रहे हैं। हम चाहते हैं कि देश के अन्य औद्योगिक प्रतिष्ठान, संगठन एवं आमजन भी ऐसे प्रयोगों को अपनाकर कार्य करें ताकि भारत में लाखों एकड़ भूमि, हवा और पानी शुद्ध हो सके। यदि भारत को बचाना है तो प्रकृति-संस्कृति को बचाना होगा क्योंकि प्रकृति के सहारे ही हमने अपनी संस्कृति का निर्माण किया है।

उन्होंने कहा कि सिर्फ विचारों से



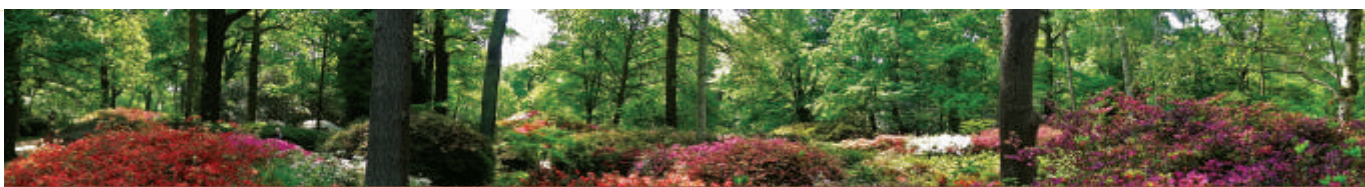
Chandiprasad Bhatt delivered his views about Culture of Forest. सभागार में व्याख्यान प्रस्तुत करते चण्डीप्रसाद भट्ट।



Chandiprasad Bhatt with Teachers, Students & others.

चण्डीप्रसाद भट्ट, शिक्षक एवं विद्यार्थियों के साथ।





culture is guided by our nature and we need to preserve one to maintain the other. It is not thoughts alone but action that can make a real difference”, she added.

On behalf of Paryavaran Mitra, Shri Bhatt was felicitated by Dr. A.K. Ahuja and Dr. Rajani Yadav with presentation of a shawl, a citation, a garland and few other items. The programme was inaugurated by Shri Bhatt with the lighting of a diya.

Earlier, Paryavaran Mitra hosted a lecture at Shri Chandiprasad Udyan that was established in July 2005. Shri Bhatt addressed the students and members of Paryavaran Mitra and expressed his satisfaction at the progress made in the last nine years. The Udyan was now an exemplary green belt. He was presented Udyan Samman Patra that highlighted the salient features of the garden. Shri Rajiv Chauhan, Shri M.K. Mishra, Smt. Richa Prakash were present at this event along with students from colleges of Ferozabad, Sirsaganj and Shikohabad. The media, other charities and friends of environment also supported the event with their presence.

नहीं बल्कि विचारों को साकार रूप देकर उसे क्रियान्वित किया जाय तभी उसका असर जन-जन पर पड़ेगा।

पर्यावरण मित्र की ओर से डा. ए.के. आहूजा एवं डा. रजनी यादव ने हिमालयी प्रकृति-संत श्री चण्डीप्रसाद भट्ट का सम्मान अंगवस्त्रम्, धनराशि, नारियल, सम्मान पत्र एवं बैजयन्ती माला भेंट कर किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री चण्डीप्रसाद भट्ट ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

इस सम्मान एवं व्याख्यान के आयोजन के पूर्व हिन्द परिसर में दिनांक 28 जुलाई 2005 को स्थापित चण्डीप्रसाद उद्यान में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस उद्यान की आधारशिला श्री चण्डीप्रसाद भट्ट ने 2005 में रखी थी। उन्होंने उद्यान का अवलोकन किया, वृक्षों की स्थिति देखी एवं पलास के पौधे का रोपण किया। तत्पश्चात् वहाँ एकत्रित छात्र-छात्राओं, शिक्षकों व अन्य गणमान्य को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज से 9 साल पूर्व यह उद्यान जिस स्थिति में था आज उसके 9 साल बाद की स्थिति से मैं बहुत संतुष्ट हूँ। श्री चण्डी प्रसाद भट्ट को इस उद्यान के बारे में एक उद्यान सम्मान पत्र भेंट किया गया जिसमें उद्यान के बारे में पूरा विवरण है।

उपरोक्त कार्यक्रमों के पूर्व वह हिन्द परिसर में विभिन्न प्रकल्पों को देखकर प्रसन्न हुए।

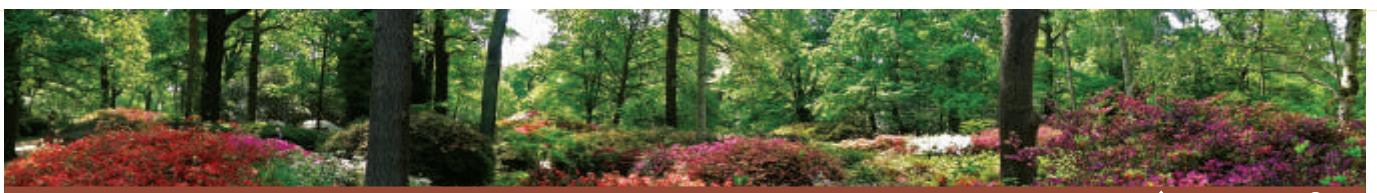
कार्यक्रम में डा. राजीव चौहान, श्री एम.के. मिश्रा एवं श्रीमती रिचा प्रकाश सहित शिकोहाबाद, सिरसागंज एवं फिरोजाबाद के विभिन्न कालेजों के शिक्षकगण, विद्यार्थी तथा सामाजिक संगठन, मीडियाकर्मी एवं पर्यावरण प्रेमी आदि काफी संख्या में उपस्थित थे।



Group Photo

समूह छायांकन





## Chandiprasad Bhatt

Chandiprasad Bhatt was born on 23 June 1934 on an auspicious day in Gopeshwar, illage in Uttarakhand. He came from a very humble background. He followed the footsteps of Vinoba Bhave and Jaiprakash Narayan after coming in contact with the philosophy of sarvodaya or progress of the entire community.

He is best known for his 'Chipko Movement' where he gathered villagers from his region to prevent the cutting down of trees.

Chandiprasad Bhatt is a true social reformer, a Gandhian environmentalist. He formed the Dasholi Village Swarajya Sangh in 1964 in Gopeshwar which later became the headquarter for the Chipko Movement. He was awarded the prestigious Ramon Magsaysay award for this environmental project. He was also awarded the Padmabhushan in 2005. The president of India honored Shri Bhatt with the International Gandhi Peace Award in 2014.

Curtailment of the villagers' legitimate rights to trees and forest products in favour of outside commercial interests enabled Bhatt, in 1973, to mobilise the forest-wise society members and villagers into the collective Chipko Andolan (Hug the Trees Movement) to force revision of forest policies dating from 1917. Women, who regularly walk three to five miles to the forest to gather and carry home fuel and fodder on their backs, took the lead. True to the movement's non-violent philosophy, these women embraced the trees to prevent their felling. Establishment of "eco-development camps" brought villagers together to discuss their needs within the context of the ecological balance of the forest. Stabilizing slopes by building rock retaining walls, the campers planted trees started in their own village nurseries. While less than one-third of the trees set out by government foresters survived, up to 88 percent of the villager-planted trees grew.

Parbat - Parbat, Basti - Basti (Every Mountain, Every Village) is the title of Shri Bhatt's book of travelogue.

Shri Bhatt has travelled to China, Russia, US, Japan and many other Asian countries. He has participated in many discussions and offered his simple and practical solutions at these gatherings.

Shri Bhatt has been a recipient of several awards which include the Padmashree, the Arkansas Travellers' Award, Global 500 Award, Indian for Collective Action honour in California, C.N.N./IBN 18 Network and Reliance sponsored Real Heroes Lifetime Achievement Award and Padma Bhushan to name a few.



## चंडीप्रसाद भट्ट

23 जून 1934 को निर्जला एकादशी के दिन गोपेश्वर गांव (जिला—चमोली) उत्तराखंड के एक अत्यंत साधारण परिवार में जन्मे श्री चंडीप्रसाद भट्ट सातवें दशक के प्रारंभ में सर्वोदयी विचारधारा के संपर्क में आए और जयप्रकाश नारायण तथा विनोबा भावे को आदर्श बनाकर अपने क्षेत्र में श्रम की प्रतिष्ठा, सामाजिक समरसता, नशाबंदी और महिलाओं—दलितों को सशक्तिकरण के द्वारा आगे बढ़ाने के काम में जुट गए। वनों का विनाश रोकने के लिए ग्रामवासियों को संगठित कर 1973 से "चिपको आंदोलन" आरंभ कर वनों का कटान रुकवाया।

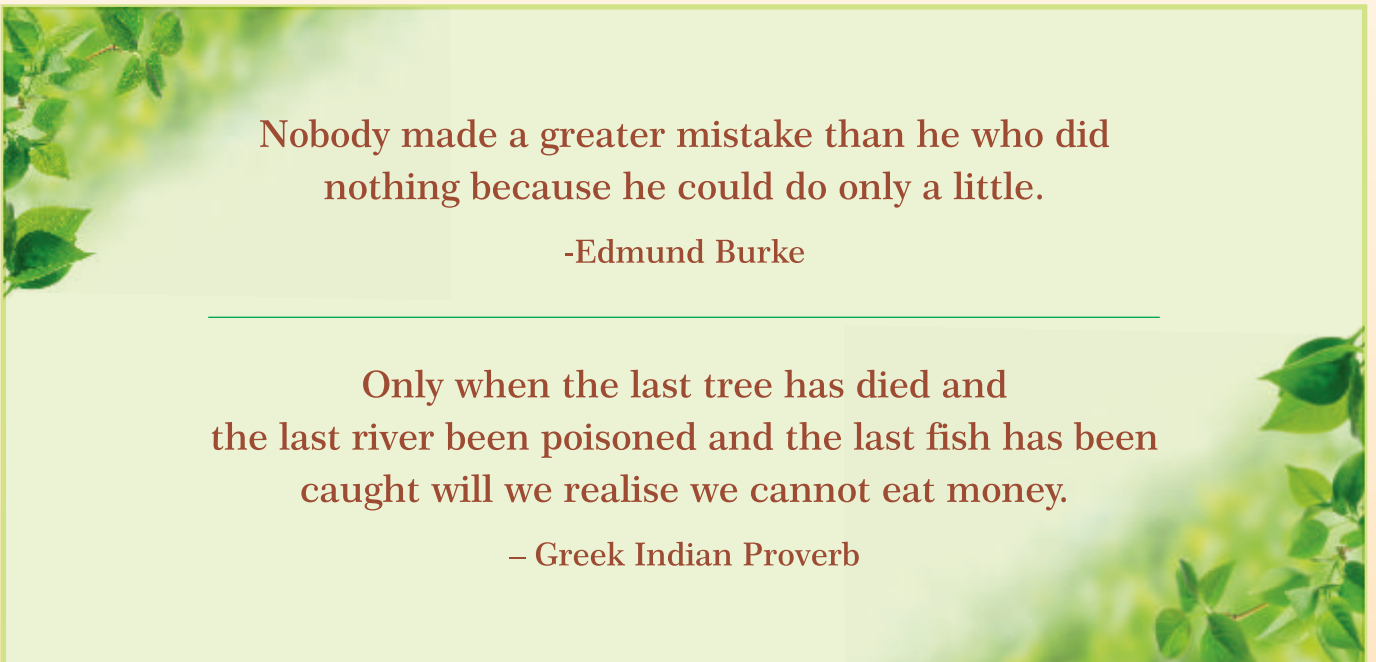
चंडीप्रसाद भट्ट भारत के गांधीवादी पर्यावरणवादी और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। उन्होंने सन् 1964 में गोपेश्वर में "दशोली ग्राम स्वराज्य संघ" की स्थापना की जो कालान्तर में चिपको आंदोलन की मातृ—संस्था बनी। वे इस कार्य के लिये रमन मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित हुए। भारत सरकार द्वारा सन् 2005 में उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। भारत के राष्ट्रपति ने वर्ष 2014 में "अंतर्राष्ट्रीय गांधी शांति पुरस्कार" से सम्मानित किया।

'चिपको आंदोलन' के रूप में सौम्यतम अहिंसक प्रतिकार के द्वारा वृक्षों एवं पर्यावरण के अंतर्संबंधों को सशक्तता से उभार कर उन्होंने संपूर्ण विश्व को जहां एक ओर पर्यावरण के प्रति सचेत एवं संवेदनशील बनाने का अभिनव प्रयोग किया, वहीं प्रतिकार की सौम्यतम पद्धति को सफलता पूर्वक व्यवहार में उतार कर दिखाया भी है। 'पर्वत पर्वत, बस्ती बस्ती' चंडीप्रसाद भट्ट की बेहतरीन यात्राओं का संग्रह है।

फ्रांस, रूस, अमेरिका, चीन, जापान सहित दक्षिण पूर्व एशियाई देशों की यात्राओं, सैकड़ों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भागीदारी के साथ ही श्री भट्ट राष्ट्रीय स्तर की अनेक समितियों एवं आयोगों में अपने व्यावहारिक ज्ञान एवं अनुभव का लाभ प्रदान कर रहे हैं।

श्री भट्ट को 1982 में रमन मैगसेसे पुरस्कार, 1983 में (अमेरिका) अरकांसस ट्रेवलर्स सम्मान, 1983 में लिटिल रॉक के मेयर द्वारा सम्मानित नागरिक सम्मान, 1986 में पद्मश्री सम्मान, 1987 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा ग्लोबल 500 सम्मान, 1997 में कैलिफोर्निया (अमेरिका) में प्रवासी भारतीयों द्वारा इंडियन फॉर कलेक्टिव एक्शन सम्मान, 2008 में गोविंद वल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर द्वारा डॉक्टर ऑफ सायंस (मानद) उपाधि, 2010 में सी.एन.एन. आई.बी.एन—18 नेटवर्क तथा रिलायंस इंडस्ट्रीज द्वारा रियल हिरोज लाईफटाईम एचीवमेंट अवार्ड आदि सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।





Nobody made a greater mistake than he who did nothing because he could do only a little.

-Edmund Burke

Only when the last tree has died and the last river been poisoned and the last fish has been caught will we realise we cannot eat money.

– Greek Indian Proverb



## Van Darshan

Van Darshan is an awareness programme organised by Paryavran Mitra for students of schools, colleges and teachers. Everyone is invited to Hind Parisar for a tour of the mini forests and nurseries created by Paryavaran Mitra. Experts talk to the students and teachers about the kind of trees and their uses. They also get a glimpse of organic farming methods. A question and answer session is organised where the farming experts tackle all the queries presented.



Forestry experts talking to students from Jaswant Nagar.  
वन दर्शन में भाग लेने आये जसवंत नगर के स्कूली बच्चों को वृक्षों के बारे में समझाते वन विशेषज्ञ।

## वन दर्शन

वन दर्शन, पर्यावरण मित्र द्वारा संचालित एक जागरूकता कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम में स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थी एवं शिक्षक भाग लेते हैं। विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को हिन्द परिसर में पर्यावरण मित्र द्वारा विकसित लघुवनों में विभिन्न प्रकार के पौधों एवं वृक्षों की उपयोगिता एवं उससे होने वाले लाभ तथा जैविक खाद बनाने के तरीके एवं प्रयोग के बारे में उनके पाठ्यक्रमों के अनुरूप जानकारी दी जाती है। इसके अतिरिक्त पौधशाला की गतिविधियों से भी उन्हें अवगत कराया जाता है। अनुभवी एवं ज्ञानवान विशेषज्ञों द्वारा उनके प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं का समाधान



School children touring the forests. वन दर्शन में वनों का अवलोकन करते स्कूली बच्चे।



Students listening avidly to forest talk वनों के बारे में जानकारी लेते स्कूली बच्चे।



Organic Farming Talk

जैविक खाद के बारे में जानकारी प्राप्त करते स्कूली बच्चे।





## Van Darshan

## वन दर्शन

This programme has been running since 2011 and many schools have participated since then with support and encouragement from the heads of schools and colleges. The programme also aims to cover topics from the school curriculum thus making the programme more meaningful.

भी किया जाता है।

वर्ष 2011 से अनवरत जारी इस कार्यक्रम में विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों एवं अध्यापक और अध्यापिकाओं ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। 28 जुलाई 2014 से लगातार चल रहे वनदर्शन कार्यक्रम में इन्दिरा मैमोरियल-सिरसागंज, सुदिती ग्लोबल अकेडमी-जसवंतनगर एवं मैनपुरी, शिकोहाबाद के सरस्वती पुरातन, यंग स्कॉलर्स अकेडमी, न्यू गार्डनिया इण्टर कालेज, गार्डनिया इण्टर कालेज, सरस्वती शिशु मन्दिर, राज काचेन्ट इत्यादि के करीब 800 से अधिक विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की।

इस दौरान विद्यार्थियों ने कई तरह के सवाल और जिज्ञासाएं भी रखीं, जिसका समाधान संबंधित विषय विशेषज्ञों ने किया।

कंचुआ और नाडेप विधि से जैविक खाद बनाने के तरीके, जैविक उत्पादों से होने वाले लाभ के बारे में बताया गया। वृक्षारोपण के वैज्ञानिक तरीकों के बारे में विशेषज्ञों द्वारा उन्हें व्यावहारिक प्रदर्शन कर जानकारी दी गई। विद्यार्थियों के साथ आए अध्यापकों ने अपने सुझाव दिए एवं उत्साह के साथ इस व्यावहारिक शैक्षणिक कार्यक्रम का आनंद लिया।



Students understand the merits of trees

वृक्षों के गुणों के बारे में समझते स्कूली बच्चे।



Students learn about Tree Plantation

वृक्षारोपण करने का तरीका सीखते स्कूली बच्चे।



Tree Plantation time

वृक्षारोपण करते स्कूली बच्चे।

### वन दर्शन में सीखा प्रकृति प्रेम

अमर उज्ज्वल न्यूज

विशालाबाद। प्रकृति प्रेम "प्रकृति प्रेम" के अंतर्गत विद्या प्रकृति प्रेम कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को वन दर्शन कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर मिला। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को वन दर्शन के महत्व और वृक्षारोपण के तरीके के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने वृक्षारोपण के तरीके सीखे और वृक्षारोपण करने का अवसर मिला।

### छात्र-छात्राओं ने किए वनों के दर्शन

विशालाबाद। विद्यार्थियों ने वन दर्शन कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर मिला। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को वन दर्शन के महत्व और वृक्षारोपण के तरीके के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने वृक्षारोपण के तरीके सीखे और वृक्षारोपण करने का अवसर मिला।

### बच्चे प्रकृति की गोद में जाकर चहके

विशालाबाद। विद्यार्थियों ने वन दर्शन कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर मिला। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को वन दर्शन के महत्व और वृक्षारोपण के तरीके के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने वृक्षारोपण के तरीके सीखे और वृक्षारोपण करने का अवसर मिला।

### पर्यावरण संरक्षण को पौधरोपण आवश्यक

विशालाबाद। विद्यार्थियों ने वन दर्शन कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर मिला। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को वन दर्शन के महत्व और वृक्षारोपण के तरीके के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने वृक्षारोपण के तरीके सीखे और वृक्षारोपण करने का अवसर मिला।

### बच्चों ने जैविक खाद बनाना सीखा

विशालाबाद। विद्यार्थियों ने वन दर्शन कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर मिला। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को वन दर्शन के महत्व और वृक्षारोपण के तरीके के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने वृक्षारोपण के तरीके सीखे और वृक्षारोपण करने का अवसर मिला।





## वन दर्शन में प्रतिभागी छात्र-छात्राओं के विचार

- मुझे आपके यहाँ पर्यावरण के द्वारा बनाई गई खाद बहुत अच्छी लगी।  
**वैभव सिंह,**  
इन्दिरा मैमोरियल सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, सिरसागंज
- जो पेड़-पौधे विलुप्त होने की करार पर हैं आप उन्हें लगाएं।  
**ललित वियोगी**  
इन्दिरा मैमोरियल सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, सिरसागंज
- मुझे बहुत अच्छा लगा मैं यहाँ आया आज मुझे प्रकृति के पास आने का मौका मिला मैंने आज अनेक पेड़ पौधों के बारे में जाना। मुझे लगता है कि सभी लोगों को यहाँ आना चाहिए।  
**कुणाल सिंह**  
इन्दिरा मैमोरियल सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, सिरसागंज
- यहाँ हिन्दू लैम्पस कपाउण्ड में बच्चों ने पेड़-पौधों के बारे में अधिक मात्रा में जानकारी ली और उन्होंने वनस्पति के नाम पूछे और अच्छा महसूस किया। यहाँ पर्यावरण मित्र के जो भी 'सर' हैं उन्होंने बच्चों को काफी अच्छी जानकारी दी तथा बच्चे संतुष्ट भी हुए।  
**प्रियंका राठौर**  
पुरातन सरस्वती विद्यामन्दिर, शिकोहाबाद
- मुझे यहाँ सबसे अधिक पेड़-पौधों को जैविक खाद के प्रयोग से लगाने का उपाय अच्छा लगा तथा अनुशासन में रहना और गंदगी को न फैलाना बेहद पसंद आया।  
**शिवानी यादव**  
पुरातन सरस्वती विद्यामन्दिर, शिकोहाबाद
- प्रकृति से संबंधित नाम व वनस्पति छात्रों के जीवन में बहुत उपयोगी हैं जिसका हिन्दू लैम्पस ने वनस्पति के द्वारा मनुष्य के जीवन में महत्व को समझाते हैं ये बहुत ही सही तरीका है।  
**रंजीत सिंह,** अध्यापक  
अमरदीप विद्यालय, फिरोजाबाद
- आज छात्राओं को पर्यावरण महोत्सव तथा प्रकृति की गोद में विभिन्न पौधों तथा खादों के बारे में जानकारी दी गयी, साथ ही वृक्षारोपण भी कराया गया। आपसे निवेदन है, आगे भविष्य में भी इसी तरह से जानकारी देते रहें।  
**छत्रपाल सिंह,** प्राचार्य  
सरस्वती विद्यामन्दिर, शिकोहाबाद
- जिस प्रकार का वातावरण व प्रकृति मैंने हिन्दू लैम्पस परिसर में देखी ऐसा देश के कोने-कोने में होना चाहिए जिससे हमें एक स्वस्थ भारत का निर्माण करने में बल मिलेगा तथा एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण होगा। जहाँ प्रकृति है वहीं वास्तव में शुद्ध जीवन है। वास्तविक जीवन की परिकल्पना मैंने इस परिसर में देखी।  
**ज्ञानेन्द्र सविता,** अध्यापक  
गार्डेनिया इण्टर कालेज, शिकोहाबाद
- हिन्दू परिसर में आकर मैं बहुत ही आनंदित हुआ। यहाँ पर विभिन्न प्रकार औषधीय पौधों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया, हिन्दू परिसर के प्रबन्ध समिति का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर हमारे विद्यालय के छात्र/छात्राओं के ज्ञान का विकास किया।  
**आर.वी. सिंह,** अध्यापक  
न्यू गार्डेनिया इण्टर कालेज, शिकोहाबाद
- हिन्दू परिसर में आकर मुझे बहुत अच्छा लगा मुझे यहाँ पर पेड़-पौधों के बारे में नई-नई जानकारी मिली और यहाँ का शान्त वातावरण बहुत अच्छा लगा। मैं शपथ लेता हूँ कि मैं नए नए किस्म के पेड़ पौधे लगाऊंगा और सभी लोगों को हिन्दू परिसर के बारे में बताऊंगा।  
**विष्णु राठौर**  
न्यू गार्डेनिया इण्टर कालेज, शिकोहाबाद
- मुझे हिन्दू में आकर बहुत अच्छा लगा। मुझे यहाँ की शुद्ध वायु एवं शान्ति बहुत अच्छी लगी तथा मुझे यहाँ के 150 साल पुराना वरगद का पेड़ देखने को मिला। यह सीख मिली कि हमें पेड़ पौधे काटने नहीं चाहिए और यहाँ का वन दर्शन बहुत ही अच्छा था और जैविक खाद बनाने की सीख मिली।  
**शिव कुमार**  
न्यू गार्डेनिया इण्टर कालेज, शिकोहाबाद
- मुझे यहाँ पेड़-पौधों के बारे में बहुत कुछ सीखा और हमने यहाँ यह भी सीखा कि हमारे जीवन में पेड़-पौधों का बहुत महत्व है।  
**मान्या गर्ग**  
पुरातन सरस्वती विद्यामन्दिर, एटा रोड, शिकोहाबाद
- मुझे यहाँ पर पौधों के बोटेनिकल नाम जानने में अच्छे लगे।  
**इंशात यादव**  
पुरातन सरस्वती विद्यामन्दिर, शिकोहाबाद
- The Place is very interesting. We all got so much knowledge about trees. Very cool place, I enjoyed a lot.  
**Manmohan Yadav**  
G.D. Goenka Public School, Firozabad
- A nice place. Hospitality extended by the institution was really good. I cannot forget the things I saw today throughout my life. Cleanliness is a serious matter of concern and it should be improved.  
**Paritosh Sharma**  
G.D. Goenka Public School, Firozabad
- I got to know here that there are some types of techniques that are very useful for our environment and are very easy to follow. This place is very awesome, I enjoyed here very much.  
**Mayank Singh**  
G.D. Goenka Public School, Firozabad
- I now know about many new plants and seeds. I found it very interesting.  
**Sejal Gupta**  
G.D. Goenka Public School, Firozabad





## Organic Fair on World Environment Day

Paryavaran Mitra celebrated World Environment Day with an exhibition on Organic Farming and organic products at the main gates of Hind Lamps, Shikohabad. The purpose of this event was to acquaint people with the ill effects of chemically fertilised, genetically modified and processed foods and the benefits of organic farming.

As a part of this drive, the stalls displayed and retailed a variety of produce such as potatoes, onions, wheat, pulses, mustard, seed oils and more. There was a display of flowers, fruits as well as plants that grew into shade - providing trees.

The visitors were informed about the harmful effects of processed foods and how they damage the environment including our soil. Organic farming was presented as a solution to promote good health and preserve our environment.

The occasion was highlighted by the planting of a mango tree in the Hind Lamps area by Shri B.B. Mukhopadhyay, Vice President, Hind Lamps Ltd. Shikohabad.



Agriculture scientists demonstrating and explaining the benefits of organic farming.

जैविक मेला में जैविक उत्पादन के बारे में जानकारी देते कृषि विशेषज्ञ।

## विश्व पर्यावरण दिवस पर जैविक मेले का आयोजन

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पर्यावरण मित्र द्वारा जैविक उत्पाद प्रदर्शनी का आयोजन हिन्द लैम्प्स शिकोहाबाद के मुख्य द्वार पर किया गया। इस जैविक मेले का उद्देश्य लोगों को रासायनिक खादों से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी देना एवं जैविक खेती के प्रति जागरूक करना है।

इसी जागरूकता के अंतर्गत जैविक मेले में जैविक उत्पादों आलू, प्याज, गेहूँ, विभिन्न प्रकार की दालें, बाजरा, राई, अलसी, सरसों का तेल, तिल, अलसी की बिक्री के साथ-साथ उनके प्रयोग एवं लाभ के बारे में जानकारी दी गयी। साथ ही फूल, फल एवं छायादार पौधों की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

प्रदर्शनी का अवलोकन करने वाले लोगों को यह बताया गया कि रासायनिक खादों से उत्पन्न सब्जियां व अनाज के प्रयोग से आये दिन बीमारियां बढ़ रही हैं एवं हमारी जमीन भी खराब होती जा रही है। अतः हम सभी को अपनी धरती, जल और अपने स्वास्थ्य को सही रखने के लिए रसायन को त्यागकर, स्थानीय पशु धन और संसाधन को बचाते हुए जैविक खेती को अपनाना चाहिए।

इस अवसर पर हिन्द परिसर में हिन्द लैम्प्स के मुख्य महाप्रबंधक बी.बी. मुखोपाध्याय द्वारा एक आम का वृक्ष रोपित किया गया।



The planting of a mango tree at Hind Lamps.

आम का पौधा रोपित करते हिन्द लैम्प्स लि. के उपाध्यक्ष।

**Nobody made a greater mistake than he who did  
nothing because he could do only a little.**

**-Edmund Burke**





Restoring Land Organic Fertility

बढ़ाये जमीन की जैविकशक्ति

## Many farmers join the Organic Farming Programme

Farmers from various villages near Shikohabad have joined the organic farming programme initiated by Paryavayan Mitra in 212. These include Nagla Mishri, Lakhnai, Jalalpur, Dudhrail Kheda, Kesari, Katauri, Rajaura, Lakhanpura, Chattanpura, Salempura, Indiamai amongst others.

103 farmers had begun active organic farming by September 2014. Agriculture experts and co-ordinators of various programmes visited the farmers and advised them on the methods of organic farming and use of organic pesticides. This included tips on preparing the farmland as well as sowing seeds; it also covered how to look after the crops and how to treat them in case of disease or pestilence.



संजय सिंह, ग्राम — डंडियामई  
Sanjay Singh, Vill - Dandiyamai



अरविन्द, ग्राम — दुधरई खेड़ा  
Arvind Singh, Vill - Dudhrail Kheda



अभय सिंह, ग्राम — दुधरई खेड़ा  
Abhay Singh, Vill - Dudhrail Kheda



दीवान सिंह, ग्राम — दुधरई खेड़ा  
Dewan Singh, Vill - Dudhrail Kheda



प्रेमशंकर, ग्राम — दुधरई खेड़ा  
Prem Shankar, Vill - Dudhrail Kheda



राजेश, ग्राम — दुधरई खेड़ा  
Rajesh, Vill - Dudhrail Kheda



राजू, ग्राम — दुधरई खेड़ा  
Raju, Vill - Dudhrail Kheda



सतीश, ग्राम — दुधरई खेड़ा  
Satish, Vill - Dudhrail Kheda



तारा सिंह, ग्राम — दुधरई खेड़ा  
Tara Singh, Vill - Dudhrail Kheda



विनोद, ग्राम — दुधरई खेड़ा  
Vinod, Vill - Dudhrail Kheda



सर्वेश, ग्राम — लखनपुरा  
Sarvesh Kumar, Vill - Lakhanpura



गिरेन्द्र सिंह, ग्राम — लखनई  
Girendra, Vill - Lakhnai

## जैविक खेती परियोजना से जुड़े सैकड़ों किसान

पर्यावरण मित्र द्वारा 2012 से प्रारम्भ किए गए एक बीघा जैविक खेती परियोजना से शिकोहाबाद एवं मदनपुर विकास खण्ड के विभिन्न ग्रामों— नगला मिश्री, लखनई, जलालपुर, दुधरई खेड़ा, केसरी, कटौरी, रजौरा, लखनपुरा, छटनपुरा, सलेमपुरा, डंडियामई के सैकड़ों किसान जुड़ चुके हैं। किसानों ने पानी, मिट्टी व हवा शुद्ध करने की दिशा में काम करना शुरू कर दिया है।

सितम्बर 2014 तक इस परियोजना से कुल 103 किसान जुड़कर जैविक खेती करने लगे हैं।

पर्यावरण मित्र के कृषि विशेषज्ञ एवं ग्रामीण परियोजना के सहायक समन्वयक गांव में जाकर किसानों को जैविक खाद एवं कीटनाशक बनाने के तरीकों की जानकारी देते हैं। खेत तैयारी से लेकर बीज लगाने एवं फसलों का निरीक्षण तथा फसल में किसी भी प्रकार की व्याधि आने पर उनका जैविक विधि से उपचार कराते हैं।

जुड़ने वाले नए किसानों को संस्था की ओर से रबी एवं खरीफ फसल के जैविक बीज उपलब्ध कराए जाते हैं। किसानों को बीज संरक्षण के लिए भी प्रेरित किया जाता है।





## Restoring Land Organic Fertility

## बढ़ाये जमीन की जैविक शक्ति

The crops harvested by organic farming methods are flavoursome and healthy. Organic farmers have also spread the message by word of mouth to other farmers.

जिन पुराने किसानों के यहां बीज की समस्या होती है उन्हें भी संस्था की ओर से बीज उपलब्ध कराया जाता है।

किसानों ने जैविक रूप से उत्पादित अनाजों को स्वास्थ्यवर्धक एवं



नरेन्द्र, ग्राम — लखनई  
Narendra, Vill - Lakhanai



प्रवीन, ग्राम — लखनई  
Praveen, Vill - Lakhanai



ओमप्रकाश, ग्राम — नगला मिश्री  
OmPrakash, Vill - Nagla Mishri



राम कैलाश, ग्राम — नगला मिश्री  
Ram Kailash, Vill - Nagla Mishri

The efforts of the farmers along with Paryavaran Mitra is helping the larger cause of saving our farmlands and managing critical resources such as land, air and water.

स्वाद से भरपूर बताया है और जो किसान जैविक खेती कर रहे हैं वे अन्य लोगों को भी इसके बारे में जानकारी देते हैं।

किसानों ने पर्यावरण मित्र के इस प्रयास को धरती, पानी, हवा और खेती को बचाने के लिए की जा रही कोशिशों को लाभदायी बताया है।

प्लास्टिक का आप करो त्याग ।  
इससे सबका होगा कल्याण ॥

यात्रा का आप पुण्य कमा लो।  
कूड़ा कूड़ेदान में डालो ॥

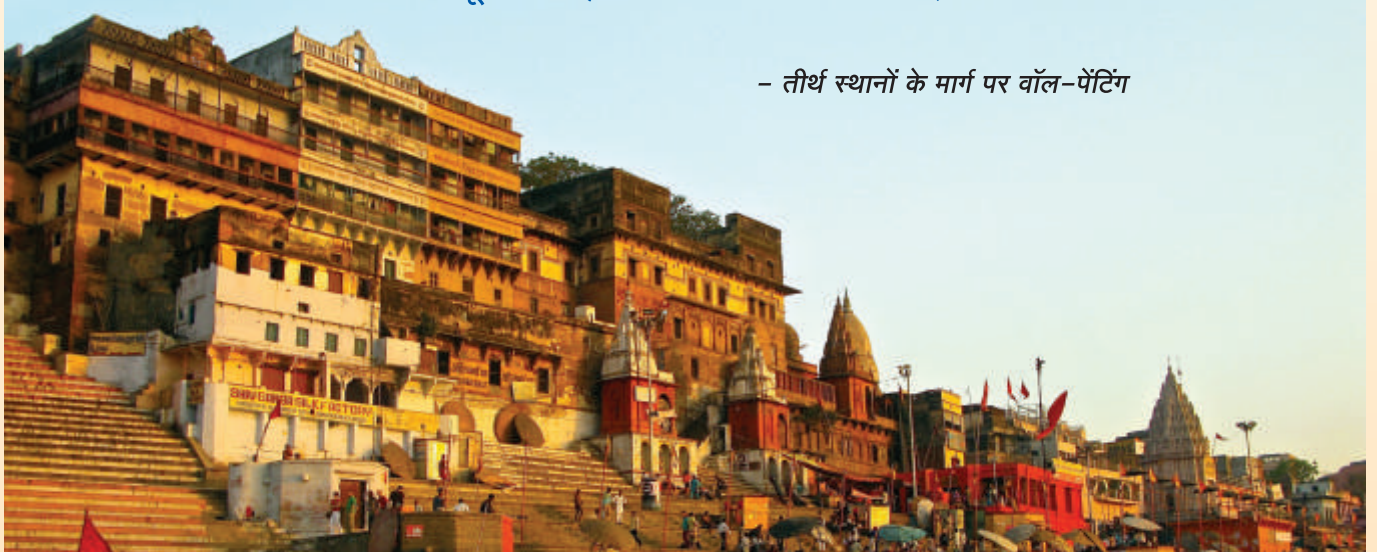
यात्री तेरी धन्य कमाई।  
रास्ते की रख पूरी सफाई ॥

धरती माता करे पुकार ।  
आस पास का करो सुधार ॥

सुनो आप क्या कहती आत्मा ।  
कूड़े - कचरे का करो खात्मा ॥

धरती, पानी, हवा रखो साफ ।  
आने वाली पीढ़ीया करेंगी माफ ॥

- तीर्थ स्थानों के मार्ग पर वॉल-पेंटिंग







## Alsi or Flaxseed – A miraculous ayurvedic meal

The last few decades have seen a drop in consumption of Omega 3 in our diet. This has been one of the main reasons in a spurt in diabetes. Flaxseed has many benefits for diabetics.

Flaxseed keeps you healthy and adds longevity. It has 23% Omega 3, Fatty Acid, 20% protein, 27% fibre along with selenium, potassium, Vit B, magnesium etc. The world acknowledges flaxseed as a super food and has included in its diet. India is taking a while to catch up.

Alsi is known by other names such as Uma, Atsi, Parvati, Neelpushpi, Teesi, etc. Alsi helps to cure cough, bile and gas related problems.

Ayurveda believes that most ailments are due to our diet. Having a clean stomach free is essential. Alsi is even better than Isabgol in clearing impurities of the stomach.

Alsi keeps sugar under control and is beneficial for diabetics as it has negligible amount of sugar in nutritional composition. It helps with the BMR and also reduces appetite to maintain healthy weight loss. It reduces fat and increases stamina. It is enriched with protein and enables healthy muscle tone.

Alsi maintains a healthy level of cholesterol, blood pressure and heart rate. It is a feel good food and keeps one happy.

Alsi is great for your skin, nails and hair. The Omega 3 and the Lignan helps protect the collagen thus making skin soft, smooth and supple.

Your joints are looked after by alsi. Consumed regularly it could act as a cheap alternative to joint surgery. Arthritis, sciatica, lupus, gout and osteoarthritis are kept in check with alsi.

## अलसी – एक चमत्कारी आयुर्वर्धक, आरोग्यवर्धक दैविक भोजन

पिछले तीन-चार दशकों से हमारे भोजन में ओमेगा 3 वसा अम्ल की मात्रा बहुत ही कम हो गई है, यह भी डायबिटीज का एक बड़ा कारण है। डायबिटीज के नियंत्रण हेतु अलसी को अमृत तुल्य माना गया है।

अलसी शरीर को स्वस्थ रखती है व आयु बढ़ाती है। अलसी में 23 प्रतिशत ओमेगा 3, फेटी एसिड, 20 प्रतिशत प्रोटीन, 27 प्रतिशत फाइबर, लिगनेन, विटामिन बी ग्रुप, सेलेनियम, पोटेशियम, मैग्नीशियम, जिंक आदि होते हैं।

अलसी को अतसी, उमा, क्षुमा, पार्वती, नीलपुष्पी, तीसी आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

आयुर्वेद के अनुसार हर रोग की जड़ पेट है और पेट साफ रखने में यह इसबगोल से भी ज्यादा प्रभावशाली है। आई.बी.एस., अल्सरेटिव कोलाइटिस, अपच, बवासीर, मससे आदि का भी उपचार करती है अलसी।

अलसी शर्करा ही नियंत्रित नहीं रखती, बल्कि मधुमेह के दुष्प्रभावों से सुरक्षा और उपचार भी करती है।

अलसी बी.एम.आर. बढ़ाती है, खाने की ललक कम करती है, चर्बी कम करती है, शक्ति व स्टेमिना बढ़ाती है, आलस्य दूर करती है और वजन कम करने में सहायता करती है। चूँकि ओमेगा 3 और प्रोटीन मांस-पेशियों का विकास करते हैं अतः बॉडी बिल्डिंग के लिये भी एक नम्बर सप्लीमेन्ट है अलसी।

अलसी कॉलेस्ट्रॉल, ब्लड प्रेशर और हृदयगति को सही रखती है। रक्त को पतला बनाये रखती है अलसी। रक्तवाहिकाओं को साफ करती रहती है अलसी।

त्वचा, केश और नाखुनों का नवीनीकरण या जीर्णोद्धार करती है अलसी। अलसी के शक्तिशाली एंटी-ऑक्सीडेंट ओमेगा 3 व लिगनेन त्वचा के कोलेजन की रक्षा करते हैं और त्वचा को आकर्षक, कोमल, नम, बेदाग व गोरा बनाते हैं।

जोड़ की हर तकलीफ का तोड़ है अलसी। जॉइन्ट रिप्लेसमेन्ट सर्जरी का सस्ता और बढ़िया उपचार है अलसी। आर्थ्राइटिस, शियेटिका, ल्युपस, गाउट, ओस्टियोआर्थ्राइटिस आदि का उपचार है अलसी।

अलसी बांझपन, पुरुषहीनता, शीघ्रस्खलन व स्थम्भन दोष में बहुत लाभदायक है।

## अलसी सेवन का तरीका

हमें प्रतिदिन 30 से 60 ग्राम अलसी का सेवन करना चाहिये। 30 ग्राम आदर्श मात्रा है। अलसी को रोज़ मिक्सी के ड्राई ग्राइंडर में पीसकर आटे में मिलाकर रोटी, पराँठा आदि बनाकर खाना चाहिये। डायबिटीज के रोगी सुबह शाम अलसी की रोटी खाएँ।







Alsi has known to have beneficial effects for women and men with fertility and sex related problems.

### Methods of using and consuming Alsi.

We must consume 30 to 60 grams of Alsi on a daily basis. You can grind alsi and add the powder to flour to make rotis or parathas. Alsi can be used to bake as well.

Dry roast Alsi and grind to a coarse degree when cool. Have it as a mouth freshener after meals.

Alsi can be used as a poultice to give relief from chest pains, swellings, pneumonia and joint pains. Inhaling the smoke from flaxseed oil relieves cough and cold. This inhalation has been known to help with hysteria as well.

Alsi powder can be dissolved in milk and consumed.

Alsi relieves pain from piles and fissures. Consuming alsi on a daily basis gets rid of constipation.

Make a health drink with 15 grams of coarsely powdered alsi, 5 grams of mulethi, 20 grams of mishri, juice of half a lemon. Add this to 300 grams of boiling water. Let it cool and drink. This will alleviate cough and also help the clear flow of urine.

इससे ब्रेड, केक, कुकीज, आइसक्रीम, चटनियाँ, लड्डू आदि स्वादिष्ट व्यंजन भी बनाये जाते हैं।

अलसी की पुल्टिस का प्रयोग गले एवं छाती के दर्द, सूजन तथा निमोनिया और पसलियों के दर्द में लगाकर किया जाता है। इसके साथ यह चोट, मोच, जोड़ों की सूजन, शरीर में कहीं गांठ या फोड़ा उठने पर लगाने से शीघ्र लाभ पहुंचाती है। यह श्वास नलियों और फेफड़ों में जमे कफ को निकाल कर दमा और खांसी में राहत देती है।

इसकी बड़ी मात्रा विरेचक तथा छोटी मात्रा गुर्दों को उत्तेजना प्रदान कर मूत्र निष्कासक है। यह पथरी, मूत्र शर्करा और कष्ट से मूत्र आने पर गुणकारी है। अलसी के तेल का धुआं सूंघने से नाक में जमा कफ निकल आता है और पुराने जुकाम में लाभ होता है। यह धुआं हिस्टीरिया रोग में भी गुण दर्शाता है। अलसी के काढ़े से एनिमा देकर मलाशय की शुद्धि की जाती है। उदर रोगों में इसका तेल पिलाया जाता है।

अलसी के तेल और चूने के पानी का घोट इमल्सन आग से जलने के घाव पर लगाने से घाव बिगड़ता नहीं और जल्दी भरता है। पथरी, सुजाक एवं पेशाब की जलन में अलसी का फांट पीने से रोग में लाभ मिलता है।

इसी कार्य के लिए इसके बीजों का ताजा चूर्ण भी दस-दस ग्राम की मात्रा में दूध के साथ प्रयोग में लिया जा सकता है। यह नाश्ते के साथ लें।

बवासीर, भगंदर, फिशर आदि रोगों में अलसी का तेल (एरंडी के तेल की तरह) लेने से पेट साफ हो मल चिकना और ढीला निकलता है। इससे इन रोगों की वेदना शांत होती है।

अलसी के बीजों का मिक्सी में बनाया गया दरदरा चूर्ण पंद्रह ग्राम, मुलेठी पांच ग्राम, मिश्री बीस ग्राम, आधे नींबू के रस को उबलते हुए तीन सौ ग्राम पानी में डालकर बर्तन को ढक दें। तीन घंटे बाद छानकर पीएं। इससे गले व श्वास नली का कफ पिघल कर जल्दी बाहर निकल जाएगा। मूत्र भी खुलकर आने लगेगा।

There's so much pollution in the air now that if  
it weren't for our lungs, there'd be no place to put it all.

– Robert Orben

All noise is waste. So cultivate quietness in your speech.

– Anon





## Save Himalaya from Global Warming

The city of Firozabad had a new way of celebrating Republic Day amongst its students. Paryavaran Mitra was instrumental in creating awareness about the ill effects of global warming on the mighty Himalayas. Schools and universities displayed thought provoking posters. These posters inspired those who read it and made them aware of the problems surrounding global warming.



An e-card about Himalaya as protector of India and Indians protecting the mighty Himalaya.

## ग्लोबल वार्मिंग से हिमालय को बचाओ

गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में पर्यावरण मित्र ने तापमान में हो रही वृद्धि से हिमालय बचाओ के बारे में जागरूक करने के लिये फिरोजाबाद जनपद के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में संदेश युक्त पोस्टर लगाये गये। पोस्टर पर लिखे सोच एवं विचार के बारे में लोगों ने सराहना की एवं इसे प्रभावकारी बताया।



भारत का रक्षक हिमालय एवं हिमालय के रक्षक हम, संदेश का ई-कार्ड व पोस्टर

## Slogan writing Competition

A slogan writing competition was organized in National Service Scheme Camps of Narayan Degree college, Shikohabad & Govt. Girls P.G. College, Sirsaganj where 600 students took part.

The topic given was Global Warming.

The main aim of this event was to know how much the students are aware about their Environmental issues & give a new dimension to their ideas & creativity.

Paryavaran Mitra is using selected slogans for wall writing for Environmental awareness in different places.

The teachers were appreciative of this initiative.

## नारा लेखन प्रतियोगिता

शिकोहाबाद के नारायण महाविद्यालय एवं सिरसागंज के राजकीय कन्या महाविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 250 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता का विषय था — “ग्लोबल वार्मिंग”।

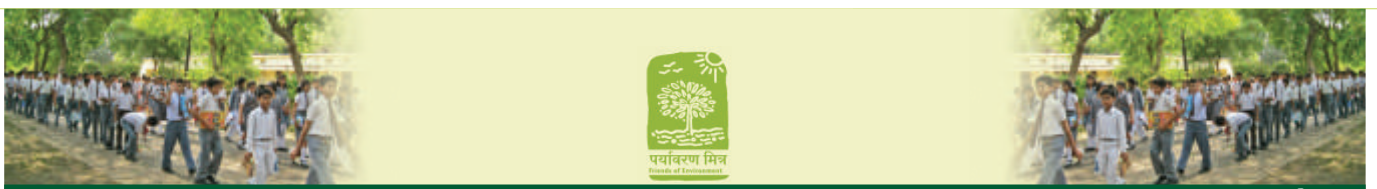
इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था नारे के माध्यम से विद्यार्थियों में पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता को जानना एवं उनके नए विचारों तथा रचनाशीलता को आयाम देना।

पर्यावरण मित्र चयनित नारे को पर्यावरण जागरूकता के लिए विभिन्न स्थानों पर दीवार लेखन हेतु प्रयोग करती है।

शिक्षकों ने पर्यावरण मित्र की इस गतिविधि की प्रशंसा की।

For God's sake, Stop Noise Pollution.





Date: 20 June, 2014

दिनांक: 20 जून, 2014

To,  
Principal/Headmaster,

Academics, teachers, students and youth are the pillars of our nation. Paryavaran Mitra believes that it is this section of our society that can bring a real change to the thinking of the nation regarding conservation of nature.

This has been the single minded focus of the activities conducted by Paryavaran Mitra over the last ten years. The best road to fight global warming and reduce the ill effects of pollution is to plant more trees, engage in organic farming and protect our forests.

Paryavaran Mitra has relentlessly worked towards educating and equipping the youth, students and teachers with practical tools to create awareness around the environment issues. Van Darshan has been a major endeavour and a huge success. A large number of students (over 5000) have benefitted from 'Van Darshan'.

You are most welcome to participate in the 'Van Darshan' programme. Students from Class IV upwards as well as high school students can form groups and visit Hind Parisar to participate in the environment related activities. This programme offers a great exposure and understanding in a way that will inspire the students. Those young minds who are motivated to save our planet and have a keen interest can send us a written request at pmhoskb@gmail.com ten days in advance. We request teachers to train their students with the right information so they can benefit from this programme and come well prepared.

We do hope you will participate in this environment project that will eventually make a difference to our country.

With green wishes

**Kiran Bajaj**

President, Paryavaran Mitra

**Please note:**

1. Every student must bring their own sports shoes, raincoat, water, cap, umbrella, notebook and writing materials.
2. After entering the premises, please park your vehicle appropriately

**You are strictly prohibited from:**

1. Loud horn or playing loud music
2. Carrying or consuming any form of tobacco or alcohol
3. Plucking flowers or leaves
4. Moving away from your group or wandering
5. Carrying any form of weapon
6. Eating during the Van Darshan tour
7. Using mobile phones during the tour
8. Any other form of unacceptable behaviour

सेवा में,  
प्राचार्य/प्रधानाध्यापक

विद्यार्थी, शिक्षक, विद्यार्थी एवं युवा ही हमारे देश के कर्णधार हैं। पर्यावरण मित्र का विश्वास है कि जब इनके मन में प्रकृति रक्षण के प्रति संवेदनशीलता एवं जागरूकता बढ़ेगी तो अवश्य ही धरती का पर्यावरण बदलेगा।

इसी को दृष्टिगत रखते हुए पर्यावरण मित्र विगत 10 वर्षों से हवा-पानी-भूमि के प्रदूषण को रोकने के लिए निरन्तर कार्य कर रहा है। विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों तथा ग्लोबल वार्मिंग को कम करने के लिए सबसे प्रभावी कदम वृक्षारोपण, वन संरक्षण एवं जैविक खेती है।

पर्यावरण मित्र संस्था विद्यार्थियों, युवाओं एवं शिक्षकों में जागरूकता और व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि के लिए वर्ष 2010 से वन दर्शन कार्यक्रम संचालित कर रही है। अभी तक विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के 5000 से अधिक विद्यार्थी 'वन दर्शन' से लाभान्वित हो चुके हैं।

वन दर्शन कार्यक्रम में आप अपने विद्यालय के कक्षा 4,5,6 कक्षा 7,8,9 एवं कक्षा 10,11,12 तक तथा महाविद्यालय के स्नातक स्तर के 25 से 50 इच्छुक एवं संवेदनशील विद्यार्थियों के समूह को उनके शिक्षक/शिक्षिकाओं के साथ हिन्द परिसर में भेजने का कार्यक्रम बना सकते हैं। भेजने से कम से कम दस दिन पूर्व वन दर्शन की तारीख व विद्यार्थियों की संख्या की सूची पर्यावरण मित्र कार्यालय में लिखित रूप से पत्र द्वारा सूचित करें। आप अपनी सूचना pmhoskb@gmail.com मेल के द्वारा भी भेज सकते हैं।

इस कार्यक्रम में आप अपने विद्यार्थियों को उनके सम्बन्धित पाठ्यक्रम को तैयार कराकर ले आये ताकि उनको समझने में आसानी हो एवं उन्हें देखकर सीखने का अनुभव हो सके।

आशा है राष्ट्रहित में पर्यावरण संरक्षण के इस आंदोलन में आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

हरित पृथ्वी की कामना के साथ

**किरण बजाज**

अध्यक्ष, पर्यावरण मित्र

**अनिवार्य नोट:**

1. प्रत्येक विद्यार्थी स्पोर्ट्स शूज, रेनकोट, पानी का बोतल, कैप, छाता, कापी एवं पेन्सिल इत्यादि लेकर आये।
2. आवासीय परिसर में प्रवेश करने के पश्चात् वाहन नियत स्थान पर खड़ा करें।

**नियमानुसार निम्नांकित सख्त निषेध है:**

1. तेज हार्न बजाना एवं ध्वनि प्रदूषण करना।
2. तम्बाकू एवं अन्य नशीले पदार्थ साथ में लाना एवं उसका प्रयोग करना।
3. पेड़ पौधों को छूना-पत्तियां फूल इत्यादि तोड़ना।
4. इधर-उधर घूमना तथा अपने समूह से अलग होना।
5. कही भी किसी प्रकार गन्दगी करना एवं थूकना।
6. किसी प्रकार का अस्त्र-शस्त्र लेकर आना।
7. वन दर्शन के समय भोज्य पदार्थ खाना।
8. मोबाइल पर एवं आपस में बातचीत करना।
9. किसी भी तरह की अनुशासनहीनता करना।





Dear friends,

Van Mahotsav is celebrated in the month of July. The first celebration dates back to 1950 and was started by the renowned educationist Shri Kanhaiyalal Maniklal Munshi

Our Indian culture has repeatedly stressed on the religious, cultural, scientific and social significance of environment. In this context, it is important to organise tree plantation drives to restore and revive our environment. Paryavaran Mitra would like to highlight this need.

It is a well-known fact that our environment has met its current fate due to the sudden growth of our economy coupled with greed, corruption and unethical practice. In 1950, 40% of our Indian soil was covered with lush forests. Today it has dwindled to a mere 20%. The population has grown by 400% and the forests have reduced by 50%. Pollution is a major contributor to this pitiful condition.

Deforestation has led to global warming and there is worse to come. The solution to prevent some of the effects of global warming is to plant more trees. Let us all stand united in looking after our forests, national parks, fields and even our own gardens by planting more trees over the next few months. Many hands make work light.

I make a sincere plea to all of you to become a part of India's green future and plant many trees around you. At the same time, we also need to be mindful that we prevent the cutting down of healthy trees. Join hands with the organisations that are working towards this cause and lend them your support through ideas, donations or time.

Note: Paryavaran Mitra has successfully planted 50,000 trees over ten years. This year we plan another 5000. Can you plant one?

With best wishes for a green earth,

Kiran Bajaj

President, Paryavaran Mitra

प्रिय बन्धुवर ,

‘वन महोत्सव’ भारत में जुलाई माह से वृक्षारोपण के लिए मनाया जाने वाला पर्व है। 1950 में इसकी शुरुआत बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रख्यात शिक्षाविद कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी ने की थी।

भारतीय संस्कृति में धार्मिक, सामाजिक-सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रकृति एवं वृक्ष के अपार महत्व को बार-बार रेखांकित किया गया है।

इसी संदर्भ में पर्यावरण मित्र संस्था आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहती है कि वर्तमान समय में वृक्षारोपण की आवश्यकता जीवधारियों के लिये अत्यंत आवश्यक हो गई है।

जैसा कि आप सबको विदित है कि अनियंत्रित विकास, कानून एवं स्वार्थपरक मनोवृत्ति के फलस्वरूप हमारी धरती हवा-पानी प्रदूषित हो चुके हैं। 1950 में हमारे देश के सम्पूर्ण भूभाग का करीब 40 प्रतिशत क्षेत्र वृक्षों से आच्छादित था जो अब मात्र 20 प्रतिशत ही रह गया है। यदि हम जनसंख्या एवं वृक्षावरण के तुलनात्मक अनुपात को देखें तो जहां जनसंख्या में 400 प्रतिशत की वृद्धि हुई वहां वनावरण में 50 प्रतिशत की कमी हो गई है। वृक्षों की कमी के कारण धरती-हवा-पानी का प्रदूषण कहर बरपा रहा है।

परिणाम यह है कि वनों के क्षरण के कारण तापमान में बढ़ोतरी हो रही है फलतः प्रदूषण, बीमारियों एवं प्राकृतिक आपदाओं (जैसे पिछले वर्ष केदारनाथ एवं सुनामी आदि) की घटनाएं हम जीवधारियों को प्रभावित कर सर्वनाश का बिगुल बजा चुकी हैं।

हवा-पानी-धरती को बचाने एवं ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव से बचने का अब भी एक बहुत बड़ा रास्ता है वृक्षारोपण। अतः हम सभी भारतवासी कमर कसकर खेत-खलिहान, बाग-बगीचे, जंगल-वीरान एवं गांव-शहर में जुलाई से लेकर सितम्बर माह तक वृक्ष लगाकर उनकी संख्या में अवश्य वृद्धि करें।

आपसे विनम्र आग्रह है कि भारत के वर्तमान एवं भविष्य के निर्मित के लिए पेड़ लगाएं एवं स्वस्थ पेड़ों को न काटने का संकल्प करें एवं कराएं। वृक्षारोपण में जो संस्थाएं सही दिशा में कार्य कर रही हैं उन्हें श्रीदान, श्रमदान तथा वृक्षदान का योगदान कर उनसे जुड़ें।

नोट: आपको यह जानकारी देना उचित होगा कि पर्यावरण मित्र संस्था विगत दस वर्षों में पचास हजार से अधिक वृक्षों को विभिन्न स्थानों पर सफलतापूर्वक रोपित कर चुकी है तथा इस वर्ष पांच हजार से अधिक वृक्षों का रोपण करेगी।

धन्यवाद सहित

हरित धरती की कामना के साथ

किरण बजाज

अध्यक्ष, पर्यावरण मित्र





## Monsoon Message

## वर्षा ऋतु के संदेश

### Monsoon - Safety tips for your well-being

Here are some tips to follow to look after your family health

#### Water related:

- Boil water from a hand pump for 20 minutes before cooling for consumption.
- Cover all water tanks.
- Don't drink water that has been stored in pots for over 48 hours.
- Don't let any water collect in puddles near your house. Spray mosquito repellent in and around the house.

#### Health related:

- Don't stay in wet clothes and keep your head and feet always dry. Keep your feet clean and wear footwear to avoid contact with filthy water and insects.
- Wear full sleeved clothes and use mosquito repellent creams and mosquito nets.

#### Meals related:

- Always wash your hands with soap before meals.
- Cover your food at all times. Eat freshly cooked food wherever possible.
- Avoid eating deep fried and heavy meals as well as cold and stale food.

#### Other:

- Avoid eating cut fruit and vegetables sold in the market. Wash vegetables in lukewarm water with salt.
- Keep your surroundings dry and clean.
- Stay away from people with cold, cough and skin diseases as far as possible.
- Beware of using water or food that is not clean that could cause a host of diseases.

### पर्यावरण मित्र वर्षा ऋतु में बरती जाने वाली सावधानियां

अपने तथा अपने परिवार के स्वास्थ्य तथा धन की रक्षा के लिए निम्नलिखित का पालन करें:

#### पानी संबंधी:

- जहां तक हो सके हैण्डपम्प नल के पानी को छानकर अथवा कम से कम 20 मिनट खौला कर फिर उसे ठंडा कर पियें।
- पानी की टंकियों को ढक कर रखें।
- गमलों आदि में भी 48 घंटे से अधिक पानी न रुकने दें।
- नाली में चूना एवं मच्छर की दवाई डालें। घर के आसपास पानी न रुकने दें।

#### शरीर संबंधी:

- शरीर, पांव एवं सिर को गीला न रखें तथा गीले कपड़े न पहनें। गंदे पानी तथा कीड़े मकोड़े से बचने के लिए नंगे पैर कभी न चलें और पैर हमेशा साफ रखें।
- पूरी बांह के साफ कपड़े पहने और मच्छररोधी क्रीम तथा मच्छरदानी का प्रयोग करें।

#### भोजन संबंधी:

- खाने से पहले साबुन से हाथ अवश्य धोयें।
- भोज्य पदार्थों को ढककर रखें। जहां तक हो सके शुद्ध एवं ताजा भोजन ही ग्रहण करें। भारी, तला हुआ ठंडा एवं बासी भोजन न करें।

#### बाजार संबंधी:

- बाजार के कटे एवं खुले हुए फल तथा भोज्य पदार्थ न खायें। सब्जियों को नमक मिले गुनगुने पानी में अच्छे से धोकर ही प्रयोग करें।

#### अन्य:

- घर एवं आसपास की जगह को साफ—सुथरा एवं सूखा रखें।
- सर्दी, जुकाम, बुखार एवं चर्म रोग आदि से पीड़ित व्यक्तियों के साथ रहने से बचें।
- गंदे एवं दूषित पानी एवं भोज्य पदार्थों के सेवन से होन वाली बीमारियों कालरा, मलेरिया, डेंगू एवं चर्मरोग आदि से बचें।

Many people will never be bothered by air pollution  
because they don't stop talking long enough to take a deep breath.

— Vikrant Parsai





## Paryavaran Mitra awakens students regarding Global Warming

Date: 9.1.2014 and 11.1.2014

Venue: N.S.S. Camp (Narayan College) Kshatriya Dharamshala, Sirsaganj and National Women's College, Sirsaganj.

As a part of the awareness campaign led by Parayavaran Mitra, over 250 students of the two colleges were taken through a power point presentation about the effects of Global Warming. This included the why and how and what can be done to prevent it.

There was a question and answer session after the presentation and this was followed by a slogan competition. The students were enthusiastic in their participation.

Dr. V.K. Saxena and Dr. R.P. Sharma from the



Students taking an oath to reduce Global Warming

ग्लोबल वार्मिंग को कम करने के लिए शपथ लेती बालिकाएँ।



Students show their determination to curb Global Warming

ग्लोबल वार्मिंग रोकने के प्रति अपनी वचनबद्धता दिखाते विद्यार्थीगण लगाते हुये।

## पर्यावरण मित्र ने किया ग्लोबल वार्मिंग पर विद्यार्थियों को जागरूक

आयोजन का दिनांक: 09.01.2014 एवं 11.01.2014

आयोजन का स्थान: एन.एस.एस. कैम्प (नारायण महाविद्यालय) क्षत्रिय धर्मशाला, सिरसागंज व राजकीय महिला महाविद्यालय, सिरसागंज

पर्यावरण मित्र जागरूकता अभियान के अंतर्गत उपरोक्त दोनों महाविद्यालयों की ओर से आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) शिविर में स्नातक स्तर के 250 विद्यार्थियों को पीपीटी के माध्यम से ग्लोबल वार्मिंग क्या है, किन कारणों से हो रहा है, उसके प्रभाव क्या है, इसे कैसे रोका जा सकता है, इसके बारे में जानकारी दी गई।

विद्यार्थियों ने पीपीटी के प्रदर्शन के पश्चात् प्रश्न भी पूछे जिनका उत्तर दिया गया। पीपीटी प्रदर्शन के पश्चात् ग्लोबल वार्मिंग पर नारा लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। उपस्थित सभी विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।



The Principal of Narayan College, expressing his views.

नारायण महाविद्यालय के प्राचार्य अपने विचार व्यक्त करते हुये।



Students reading the Parayavaran Mitra pamphlets

विद्यार्थियों को कार्यक्रम के पश्चात् पीएम सूचना पत्रक ग्रहण करते विद्यार्थीगण।





colleges were present along with the N.S.S. representation consisting of Dr. Arvind Kumar Singh, Dr. Bharatveer Singh, Dr. Kanti Sharma and Dr. Yashveer Singh amongst others. The initiatives taken by Parayavaran Mitra with regard to global warming was highly appreciated.

इस अवसर पर दोनों महाविद्यालयों के प्राचार्य डा. वी.के. सक्सेना एवं डा. आर.पी. शर्मा सहित एन.एस.एस. के कार्यक्रम अधिकारीगण डा. अरविन्द कुमार सिंह, डा. भरतवीर सिंह, डा. कान्ती शर्मा, डा. यशवीर चौधरी सहित अन्य प्राध्यापकगण उपस्थित थे। उन्होंने ग्लोबल वार्मिंग के बारे में पर्यावरण मित्र द्वारा किये जा रहे प्रयासों को सराहा।

### Global Warming



#### What is Global Warming?

Global warming is the average increase in the temperature of our global system. Our earth receives natural warmth from the sun. The rays penetrate the atmosphere, strike the surface of our planet and travel back through reflection. The atmosphere of our earth is made up of several gases in using greenhouse gases which Some form a natural layer over the earth thus trapping the heat.

#### What are the causes of Global Warming?

Mankind is mainly responsible for global warming. Our activities and pursuits have led to increase in



### ग्लोबल वार्मिंग के बारे में जानकारी

#### क्या है ग्लोबल वार्मिंग ?

जैसा कि नाम से ही साफ है, ग्लोबल वार्मिंग धरती के वातावरण के तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी है। हमारी धरती प्राकृतिक तौर पर सूर्य की किरणों से उष्मा (हीट, गर्मी) प्राप्त करती है। ये किरणें वायुमंडल (एटमोस्फियर) से गुजरती हुई धरती की सतह (जमीन, बेस) से टकराती हैं और फिर वहीं से परावर्तित (रिफ्लेक्शन) होकर पुनः लौट जाती हैं। धरती का वायुमंडल कई गैसों से मिलकर बना है जिनमें कुछ ग्रीनहाउस गैसों भी शामिल हैं। इनमें से अधिकांश (बहुत अधिक) धरती के ऊपर एक प्रकार से एक प्राकृतिक आवरण (लेयर, कवर) बना लेती हैं। यह आवरण लौटती किरणों के एक हिस्से को रोक लेता है और इस प्रकार धरती के वातावरण को गर्म बनाए रखता है।

#### क्या हैं ग्लोबल वार्मिंग की वजह ?

ग्लोबल वार्मिंग के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार तो मनुष्य और उसकी गतिविधियां ही हैं। अपने आप को इस धरती का सबसे बुद्धिमान प्राणी समझने वाला मनुष्य अनजाने में या जानबूझकर अपने ही रहवास को खत्म करने पर तुला हुआ है। इन मनुष्य जनित गतिविधियों से कार्बन डायऑक्साइड, मिथेन, नाइट्रोजन ऑक्साइड इत्यादि ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा में बढ़ोतरी हो रही है जिससे इन गैसों का आवरण सघन होता जा रहा है। यही आवरण सूर्य की परावर्तित किरणों को रोक रहा है जिससे धरती के तापमान में वृद्धि हो रही है। वाहनों, हवाई जहाजों, बिजली बनाने वाले संयंत्रों, उद्योगों इत्यादि से अंधाधुंध होने वाले गैसीय उत्सर्जन की वजह से कार्बन डायऑक्साइड में बढ़ोतरी हो रही है।

जंगलों का बड़ी संख्या में हो रहा विनाश इसकी दूसरी वजह है। जंगल कार्बन डायऑक्साइड की मात्रा को प्राकृतिक रूप से नियंत्रित करते हैं, लेकिन इनकी बेतहाशा कटाई से यह प्राकृतिक नियंत्रण भी हमारे हाथ से छूटता जा रहा है।

इसकी एक अन्य वजह सीएफसी है जो रेफ्रिजरेटर्स, अग्निशामक यंत्रों इत्यादि में इस्तेमाल की जाती है। यह धरती के ऊपर बने एक प्राकृतिक आवरण ओजोन परत को नष्ट करने का काम करती है। ओजोन परत सूर्य से निकलने वाली





the release of methane, carbon dioxide, nitrogen oxide that have led to an increase in greenhouse gases. There is more heat trapped now from the sun leading to an overall rise in temperature. Motor vehicles, planes, large manufacturing plants, industries are guilty of adding to the increase in carbon monoxide.

Yet another cause is the deforestation happening in our jungles. The forests and green belts maintain a balance in the levels of carbon dioxide. The cutting down of forests is now causing these levels to rise.

Another cause of concern is the CFC which is present in aerosol tins and refrigerators. CFC destroys the ozone layer that protects the earth from UV rays.

### Effects of Global Warming:

The average temperature of the earth has risen from 0.3 to 0.6 degrees Celsius in the last ten years.

#### Effect on our oceans:

Ocean temperatures rise: With the increase in the temperature, the glaciers will melt and flow into the oceans over the years. The natural shorelines will soon disappear. A lot of people living in coastal areas will be displaced

#### Effects on human health :

The increase in temperature will lead to an increase in diseases such as malaria, dengue and yellow fever. That day may not be far when we won't have sufficient water, fresh food or fresh air to breathe.



घातक पराबैंगनी (अल्ट्रावायलेट) किरणों को धरती पर आने से रोकती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस ओजोन परत में एक बड़ा छिद्र हो चुका है जिससे पराबैंगनी किरणें सीधे धरती पर पहुंच रही हैं और इस तरह से उसे लगातार गर्म बना रही हैं। यह बढ़ते तापमान का ही नतीजा है कि ध्रुवों (पोलर्स) पर सदियों से जमी बर्फ भी पिघलने लगी है। विकसित या हो अविकसित देश, हर जगह बिजली की जरूरत बढ़ती जा रही है। बिजली के उत्पादन के लिए जीवाष्म ईंधन (फॉसिल फ्यूल) का इस्तेमाल बड़ी मात्रा में करना पड़ता है। जीवाष्म ईंधन के जलने पर कार्बन डायऑक्साइड पैदा होती है जो ग्रीनहाउस गैसों के प्रभाव को बढ़ा देती है। इसका नतीजा ग्लोबल वार्मिंग के रूप में सामने आता है।

### ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव:

पिछले दस सालों में धरती के औसत तापमान में 0.3 से 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हुई है। आशंका यही जताई जा रही है कि आने वाले समय में ग्लोबल वार्मिंग में और बढ़ोतरी ही होगी।

समुद्र सतह में बढ़ोतरी: धरती का तापमान बढ़ने से ग्लैशियरों पर जमा बर्फ पिघलने लगेगी। कई स्थानों पर तो यह प्रक्रिया शुरू भी हो चुकी है। ग्लैशियरों की बर्फ के पिघलने से समुद्रों में पानी की मात्रा बढ़ जाएगी जिससे साल-दर-साल उनकी सतह में भी बढ़ोतरी होती जाएगी। समुद्रों की सतह बढ़ने से प्राकृतिक तटों का कटाव शुरू हो जाएगा जिससे एक बड़ा हिस्सा डूब जाएगा। इस प्रकार तटीय (कोस्टल) इलाकों में रहने वाले अधिकांश लोग बेघर हो जाएंगे।

मानव स्वास्थ्य पर असर: जलवायु परिवर्तन का सबसे ज्यादा असर मनुष्य पर ही पड़ेगा और कई लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। गर्मी बढ़ने से मलेरिया, डेंगू और यलो फीवर जैसे संक्रामक रोग बढ़ेंगे। वह समय भी जल्दी ही आ सकता है

**Effects on vegetation, animal and bird life:**

It is believed that animals and plants will naturally migrate towards colder climates. In this process they may lose their original characteristics which could lead to other implications.

**Effects on city life:**

We will require more electricity to cool our homes and offices which will escalate the effects of the existing global warming.

What can we do to prevent Global Warming

There is worldwide concern about Global Warming. We all need to take steps to jointly prevent this.

- We all need to implement the Kyoto Protocol. We need to reduce emission of harmful gases.
- This is not the responsibility of the government alone. We all can contribute by reducing the use of electricity, petrol and diesel.
- We need to stop cutting down the trees of our forests. Instead, plant as many trees as you can to prevent global warming
- Technology can play a huge role by manufacturing refrigerators that do not release CFC and cars that cause less fuel emissions.

जब हममें से अधिकांश को पीने के लिए स्वच्छ जल, खाने के लिए ताजा भोजन और श्वास लेने के लिए शुद्ध हवा भी नसीब नहीं हो।

पशु-पक्षियों व वनस्पतियों पर असर: ग्लोबल वार्मिंग का पशु-पक्षियों और वनस्पतियों पर भी गहरा असर पड़ेगा। माना जा रहा है कि गर्मी बढ़ने के साथ ही पशु-पक्षी और वनस्पतियां धीरे-धीरे उत्तरी और पहाड़ी इलाकों की ओर पलायन करेंगे, और इस प्रक्रिया में कुछ तो अपना अस्तित्व ही खो देंगे।

शहरों पर असर: इसमें कोई शक नहीं है कि गर्मी बढ़ने से ठंड भगाने के लिए इस्तेमाल में लाई जाने वाली ऊर्जा की खपत में कमी होगी, लेकिन इसकी पूर्ति एयर कंडिशनिंग में हो जाएगी। घरों को ठंडा करने के लिए भारी मात्रा में बिजली का इस्तेमाल करना होगा। बिजली का उपयोग बढ़ेगा तो उससे भी ग्लोबल वार्मिंग में इजाफा ही होगा।

**ग्लोबल वार्मिंग से कैसे बचें**

ग्लोबल वार्मिंग के प्रति दुनियाभर में चिंता बढ़ रही है। इसके लिए हमें कई प्रयास करने होंगे।

- सभी देश क्योटो संधि का पालन करें। इसके तहत 2012 तक हानिकारक गैसों के उत्सर्जन (एमिशन, धुरें) को कम करना होगा।
- यह जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं है। हम सब भी पेट्रोल, डीजल और बिजली का उपयोग कम करके हानिकारक गैसों को कम कर सकते हैं।
- जंगलों की कटाई को रोकना होगा। हम सभी अधिक से अधिक पेड़ लगाएं। इससे भी ग्लोबल वार्मिंग के असर को कम किया जा सकता है।
- टेक्निकल डेवलपमेंट से भी इससे निपटा जा सकता है। हम ऐसे रेफ्रिजरेटर्स बनाएं जिनमें सीएफसी का इस्तेमाल न होता हो और ऐसे वाहन बनाएं जिनसे कम से कम धुआं निकलता हो।

**I rant and rave about noise pollution.**

**– Robert Carlyle**





# पर्यावरण मित्र

## Friends of Environment



### Green Movement:

- Tree Plantation
- Development of small forests Green Belts
- Nursery Development Indoor/Outdoor

### Organic Farming:

- Soil Testing
- Organic Manure and pesticides
- Organic Kitchen Garden
- Organic Agriculture
- Organic Fruit & Medicinal Plants

### Water Conservation:

- Rain Water Harvesting
- Water Purification
- ETP in factories
- Revival of ponds and water bodies

### Cleanliness Drives Training:

- To farmers and students
- Discussion & Interactions with School & College Students, Farmers and Doctors

### Awareness Programme:

- Celebration of the important international environment days
- Wall writing
- Rallies and Seminars
- Street Plays and Drawing & Painting Contests
- Campaign against plastic, tobacco, noise pollution
- Exchange of information & Projects with other NGO's

### हरित आंदोलन:

- वृक्षारोपण
- लघु वनों का विकास
- ग्रीन बेल्ट
- नर्सरी का विकास-घर के अंदर/बाहर

### जैविक खेती:

- मिट्टी परिक्षण
- जैविक खाद एवं कीटनाशक
- जैविक किचन गार्डन
- जैविक कृषि
- जैविक फल एवं औषधि पौधे

### जल संरक्षण:

- वर्षा जल संचयन
- जल शुद्धिकरण
- कारखानों में ईटीपी
- तालाबों और जलाशयों का पुनरुद्धार

### स्वच्छता अभियान प्रशिक्षण:

- किसानों और विद्यार्थियों को प्रशिक्षण
- स्कूल और कॉलेज विद्यार्थियों, किसानों एवं डॉक्टरों से चर्चा एवं बातचीत

### जागरूकता कार्यक्रम:

- महत्वपूर्ण विश्व पर्यावरण दिवस मनाना
- वाल राइटिंग
- रैलियां और गोष्ठियां
- नुक्कड़ नाटक तथा चित्रकला प्रतियोगिताएं
- प्लास्टिक, तम्बाकू, ध्वनि प्रदूषण के विरुद्ध अभियान
- अन्य गैर-सरकारी संगठनों के साथ परियोजनाएं और सूचनाओं का आदान-प्रदान

### Paryavaran Mitra Managing Committee:

President	: Kiran Bajaj
Vice President	: Shekhar Bajaj
Secretary	: Mangesh Patil
Dy.Secretary	: Hari Om Sharma
Treasurer	: Srikant Pandey
Dy.Treasurer	: Peter D'souza
Executive Committee	: Mukul Upadhyaya, Praful Phadke Dr. A.k. Ahuja, Dr. Rajni Yadav Manmohan Singh, Raj Kishor Singh, Abhay Dixit, Deepak Ohri
Auditor	: Shikhar Sarin

### पर्यावरण मित्र संचालक समिति:

अध्यक्ष	: किरण बजाज
उपाध्यक्ष	: शेखर बजाज
सचिव	: मंगेश पाटील
उपसचिव	: हरिओम शर्मा
कोशाध्यक्ष	: श्रीकांत पाण्डेय
उपकोशाध्यक्ष	: पीटर डिसोजा,
कार्यसमिति सदस्य	: मुकुल उपाध्याय, प्रफुल्ल फडके, डॉ. ए.के. आहूजा, डॉ. रजनी यादव, मनमोहन सिंह, राजकिशोर सिंह, अभय दीक्षित, दीपक ओहरी
लेखा परीक्षक	: शिखर सरीन

### Contact :-

**Mumbai:** Kiran Bajaj - President, Praful Phadke  
Bajaj Electricals Ltd., 701, 9th Floor, Rustonjee Aspiree, Bhanu  
Shankar Yagnik Marg, Sion, Mumbai - 400 022. Ph.: 24064200  
Mob.: 09920949434  
E-Mail: Paryavaran.mitra@bajajelectricals.com  
Website: www.paryavaranmitra.org

### Shikohabad:

Shashikant Pandey (09897595419),  
Mohit Jadon (09358361489)  
Hind Lamps Ltd., Shikohabad, Dist : Firozabad (U.P.), 283141  
Phone No.: 05676-234018 F: 05676-234018, 234300.  
E-Mail: pmhoskb@gmail.com

### सम्पर्क :

**मुम्बई :** किरण बजाज - अध्यक्ष, प्रफुल्ल फडके,  
बजाज इलेक्ट्रिकल्स लि., ७०१, ९ माला, रुस्तमजी अस्पायरी,  
भानुशंकर याज्ञिक मार्ग, सायन, मुम्बई : ४०००२२.  
टे: २४०६४२०० मो.: ०९९२०९४९४३४  
ई-मेल : Paryavaran.mitra@bajajelectricals.com  
वेब साइट : www.paryavaranmitra.org

### शिकोहाबाद:

शशिकान्त पाण्डेय (०९८९७५९५४९९),  
मोहित जादोन (०९३५८३६९४८९)  
हिन्द लैम्प्स लि. शिकोहाबाद, जिला: फिरोजाबाद (उ.प्र.), २८३१४१  
फोन नं.: ०५६७६-२३४०१८ फैक्स: ०५६७६-२३४०१८, २३४३००  
ई-मेल : pmhoskb@gmail.com